RNI:RJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2021
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

शिव आमंत्रण

आध्यात्म की नई उड़ान

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

आजादी का अमृत महोत्सव

20 जनवरी से दिसंबर 2022 तक चलेगा अभियान

वर्ष 09 | अंक 04 | हिन्दी (मासिक) | अप्रैल 2022 | पृष्ठ 16 | मूल्य ₹ 9.50

महा अभियान] ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के देशभर के सेवाकेंद्रों पर उत्सव के रूप में मनाया जा रहा है अमृत महोत्सव

1000 कार्यक्रम देशभर में दो माह में हुए

25 लाख लोगों ने उद्घाटन कार्यक्रम को प्रत्यक्ष रूप से और सोशल मीडिया पर देखा

5000 सेवाकेंद्रों के लाखों बीके भाई-बहनें उत्साह से जुटे

980082 20 जनवरी से 28 फरवरी तक के कार्यक्रमों में बने सहभागी

30 से अधिक देशव्यापी अभियान जारी

40 दिन, एक हजार कार्यक्रम, 35 लाख लोगों तक पहुंचा संदेश

आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान का देशभर में महा उत्सव

शांतिवन में आयोजित स्वर्ण स्वर भारत कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कवि कुमार विश्वास, गायक कैलाश खेर व अन्य।

शिव आमंत्रण, आबू रोड । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 20 जनवरी को शुभारंभ किए गए आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर महा अभियान को लेकर ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के देशभर में स्थित सभी पांच हजार सेवाकेंद्रों पर उत्साह देखते ही बन रहा है। हर एक सेवाकेंद्र बड़े ही उमंग-उत्साह के साथ समाज के हर वर्ग तक आजादी के महानायकों की वीरगाथा, स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास और भारत की गौरवशाली परंपरा आध्यात्म और राजयोग का संदेश पहुंचाने के लिए जुटे हुए हैं। इस महा अभियान में लाखों ब्रह्माकुमार भाई-बहन अपने तन-मन-धन को सफल करते हुए भारत की गौवगाथा से जन-जन को रूबरू कराने में अपनी मदद का हाथ बढ़ा रहे हैं। देशभर में 20 जनवरी से 28 फरवरी तक अभियान के तहत एक हजार से अधिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसमें जहां 980082 लोगों ने प्रत्यक्ष रूप से भाग लिया, वहीं 25 लाख से अधिक लोगों ने टीवी, यूट्यूब, फेसबुक और इंस्टाग्राम आदि के माध्यम से देखा और सुना। साथ ही 30 से अधिक देशव्यापी अभियान जारी हैं। इन सभी अभियानों और कार्यक्रम का एक ही लक्ष्य है कि भारत की सनातन और महान संस्कृति से प्रत्येक भारतवासी रूबरू हो सके, ताकि वह अपनी महान परंपरा पर गर्व कर सके। ब्रह्माकुमारीज़ भी अपने स्थापना काल वर्ष 1937 से ही नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के कार्य में जुटी हुई है।

बता दें कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान और भारत सरकार के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्रालय द्वारा एक वर्षीय आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर महा अभियान शुरू किया गया है। अभियान का शुभारंभ 20 जनवरी 2022 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्चुअल रूप से किया था। इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने सात अभियानों को हरीझंडी दिखाकर रवाना किया था।

महा अभियान के तहत हुए कार्यक्रम

		(जनवरी)	(फरवरी)
अभियान	संख्या	16	113
	लाभान्वित	101951	53527
प्रतियोगिताएं	संख्या	40	31
	लाभान्वित	4096	3892
कॉन्फ्रेंस	संख्या	09	34
	लाभान्वित	1942	4252
सांस्कृतिक कार्यक्रम	संख्या	22	32
	लाभान्वित	1548	9538
बच्चों के कार्यक्रम	संख्या	13	88
	लाभान्वित	2406	
फेस्टिवल सेलीब्रेशन	संख्या	48	172
	लाभान्वित	3763	
स्वास्थ्य परीक्षण जांच शिविर	संख्या	02	13
	लाभान्वित	900	2282
मेडिटेशन सत्र	संख्या	13	45
	लाभान्वित	27079	26261
सेमीनार	संख्या	17	48
	लाभान्वित	1833	5222
सामाजिक सेवा	संख्या	33	
	लाभान्वित	2923	57719
वेबीनार	संख्या	15	18
	लाभान्वित	3034	2380
मीडिया सेमीनार	संख्या	01	01
	लाभान्वित	2079	50
मेगा उद्घाटन कार्यक्रम	संख्या	03	-
	लाभान्वित	870095	-
महोत्सव	संख्या	01	01
	लाभान्वित	10000	
अन्य आयोजन	संख्या	26	351
	लाभान्वित	2215	

नोट: ग्राफिकल डाटा प्रतिशत के आधार पर नहीं है।

ब्रह्माकुमारीज़ के सभी 20 प्रभाग सेवा में जुटे

ब्रह्माकुमारीज़ की सहयोगी संस्था राजयोग एजुकेशन एवं रिसर्च फाउंडेशन के तहत संचालित मीडिया, शिक्षा, चिकित्सा, कृषि एवं ग्राम विकास और युवा प्रभाग को मिलाकर सभी 20 प्रभाग अपनी पूरी क्षमता के साथ समाज के प्रत्येक वर्ग को जागरूक, संगठित करने में जुटे हुए हैं। इनके द्वारा देशभर में राष्ट्रीय अभियान, सेमीनार, महासम्मेलन, कॉन्फ्रेंस, गोष्ठी, सभा का आयोजन किया जा रहा है।

उत्साहः देशभर में नशामुक्ति अभियानों का आगाज

देशभर में नशामुक्ति अभियानों का आगाज- देशभर के अलग-अलग सेवाकेंद्रों पर युवा प्रभाग और चिकित्सा प्रभाग द्वारा राज्य स्तर और क्षेत्रीय स्तर पर नशामुक्ति अभियान चलाए जा रहे हैं। गांव-गांव जाकर लोगों को नशे के दुष्परिणाम बताते हुए उन्हें नशामुक्ति का संकल्प कराया जा रहा है। जो नशा छोड़ने के लिए उत्साह दिखाते हैं उन्हें काउंसलिंग करके उन्हें मेडिटेशन का कोर्स कराकर नशे की लत छुड़ाई जा रही है।

1 प्रशासक सेवा प्रभाग

थीम

प्रशासन और शासन में आध्यात्मिकता

स्वशासन से ही होगा श्रेष्ठ प्रशासन

● **देशभर में सेमीनार, वर्कशॉप, स्नेह मिलन कार्यक्रम से प्रशासकों को दे रहे आध्यात्मिकता का संदेश**

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की सहयोगी संस्था राजयोग एजुकेशन एवं रिसर्च फाउंडेशन के 20 प्रभागों में से एक प्रशासक सेवा प्रभाग के माध्यम से देशभर के प्रशासकों को जीवन में आध्यात्मिकता की ओर कदम बढ़ाने, उन्हें समाज के सच्चे सेवक बनकर नई दिशा देने के लिए अनेकानेक सेमीनार, वर्कशॉप का आयोजन जारी है। प्रभाग की ओर से जनवरी में 4 कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें 2500320 लोगों ने लाभ लिया। वहीं फरवरी में भी 4 कार्यक्रमों के माध्यम से 945 प्रशासकों को संदेश दिया गया।

यह कार्यक्रम जारी-

- प्रशासकों के लिए मुख्यालय और रिट्रीट सेंटर्स में महासम्मेलन
- प्रशासकों के लिए सेमीनार- वर्कशॉप
- डॉयलाग सेशन
- ऑनलाइन वेबीनार
- स्नेह मिलन कार्यक्रमों का आयोजन

सागर, मप्र

देशभर में हुए कार्यक्रम	माह	कार्यक्रम	प्रतिभागी
	जनवरी	04	25320
	फरवरी	04	945

2 कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग

थीम

आत्मनिर्भर किसान अभियान

यौगिक खेती से जोड़ने की मुहिम

ब्रह्माकुमारीज का कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग देश के अन्नदाताओं की तस्वीर बदलने के प्रयास में वर्ष 1996 से जुटा है। प्रभाग ने देशव्यापी अभियान, किसान सम्मेलन, गोष्ठियों और सभाओं के माध्यम से हजारों किसानों को नशामुक्त कर उनकी सामाजिक, आर्थिक और मानसिक तरक्की में नये आयाम गढ़े हैं। प्रभाग ने वर्ष 2007 में शाश्वत यौगिक-जैविक खेती पद्धति की नींव रखी। आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत प्रभाग द्वारा आत्मनिर्भर किसान अभियान चलाया जा रहा है। जनवरी में देशभर में चार कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें 2500505 लोगों ने भाग लिया। फरवरी में 26 कार्यक्रम हुए। इसमें 6300 किसानों को आध्यात्मिक संदेश के साथ राजयोग मेडिटेशन और जैविक खेती का संदेश दिया गया।

किसानों के कल्याण में जारी सेवाएं-

- देशभर में किसान सशक्तिकरण अभियान और सम्मेलन
- शाश्वत यौगिक-जैविक खेती का प्रशिक्षण
- नशामुक्ति और राजयोग मेडिटेशन का संदेश
- कृषि विश्वविद्यालयों और सरकारी उपक्रमों में कार्यक्रम

दमन

देशभर में हुए कार्यक्रम	माह	कार्यक्रम	प्रतिभागी
	जनवरी	04	250505
	फरवरी	27	6550

3 कला एवं संस्कृति प्रभाग

थीम

भारतीय गौरव शाली संस्कृति का पुनरुत्थान

भारत की गौरवशाली सनातन संस्कृति के पुनरुत्थान में जुटा प्रभाग

कला एवं संस्कृति प्रभाग द्वारा देशभर में कवि सम्मेलन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, गीत, नृत्य, ड्रामा और गीत-डांस प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं। प्रभाग का उद्देश्य है भारत की गौरवशाली संस्कृति और परंपरा को पुनर्जीवित करके लोगों को सनातन संस्कृति से रूबरू कराना। साथ ही जो गांव-गांव में छुपी हुई अनदेखी प्रतिभाएं हैं उन्हें सामने लाकर मंच प्रदान करना है। प्रभाग द्वारा जनवरी में कुल 21 कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें 2501776 लोगों को लाभ मिला। वहीं फरवरी में 26 कार्यक्रम देशभर में आयोजित किए गए। इसका 3358 लोगों ने लाभ लिया।

यह कार्यक्रम जारी

- प्रमुख शहरों में सांस्कृतिक महोत्सव
- कवि सम्मेलन, देशभक्ति गीत, नृत्य एवं ड्रामा
- बॉलीवुड हस्तियों के लिए सम्मेलन एवं संगोष्ठियां
- विभिन्न स्पर्धाएं- पेंटिंग, रंगोली, गीत, डांस आदि
- आजादी के अमृत महोत्सव विषय पर चित्रकला प्रदर्शनियां

अमरेली, गुजरात

देशभर में हुए कार्यक्रम	माह	कार्यक्रम	प्रतिभागी
	जनवरी	21	251776
	फरवरी	26	3358

4 व्यापार एवं उद्योग द्वारा समृद्ध भारत

थीम

प्रशासन और शासन में आध्यात्मिकता

गुणों और मूल्यों का व्यापार ही सच्चा व्यापार, देशभर में सेमीनार जारी

व्यापार की पहली शर्त है जोखिम और जहां जोखिम होता है वहां तनाव होना स्वाभाविक है। व्यापार एवं उद्योग प्रभाग का उद्देश्य है कि व्यापारी वर्ग अपने जीवन में आध्यात्मिकता को अपनाकर आनंदित रहें, ताकि व्यापार के जोखिम से होने वाले तनाव को कम किया जा सके। इसके लिए देशभर के अलग-अलग सेवाकेंद्रों पर व्यापारियों और उद्योगपतियों के लिए सेमीनार, वर्कशॉप आदि का आयोजन किया जा रहा है। व्यापार एवं उद्योग द्वारा समृद्ध भारत थीम के तहत जनवरी में कुल 3 कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनका 2500050 लोगों को लाभ मिला। वहीं फरवरी में 5 कार्यक्रम हुए, जिनमें 830 लोगों ने सहभागिता निभाई।

यह कार्यक्रम जारी-

- आत्मनिर्भर भारत विषय पर विभिन्न कंपनियों और उद्योगों में सेमीनार और वर्कशॉप
- मुख्यालय और रिट्रीट सेंटर्स पर महासम्मेलनों का आयोजन
- व्यापारियों के लिए विभिन्न कार्यक्रम
- उद्योगपतियों और व्यापारियों का सम्मान

विद्याधरनगर, जयपुर

देशभर में हुए कार्यक्रम	माह	कार्यक्रम	प्रतिभागी
	जनवरी	03	25050
	फरवरी	05	945

5 शिक्षा प्रभाग

थीम: स्वर्णिम भारत के लिए नई शिक्षा

मूल्य शिक्षा से मिलेगी नई दिशा

● आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत देशभर में सेमीनार का आयोजन जारी

शिक्षा प्रभाग द्वारा स्वर्णिम भारत के लिए नई शिक्षा थीम पर देशव्यापी अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत माध्यमिक स्कूलों से लेकर हायर सेकंडरी स्कूल, कॉलेज, महाविद्यालय, विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों को मूल्य शिक्षा देने के लिए सेमीनार, वर्कशॉप का आयोजन जारी है। राजयोगा थॉप लैब और बच्चों के लिए साप्ताहिक ऑनलाइन माध्यम से नैतिक शिक्षा दी जा रही है। जनवरी में 10 कार्यक्रम हुए। इनमें 2501904 लोग लाभांवित हुए। फरवरी में 95 सभा, सम्मेलन के जरिए 25315 विद्यार्थियों, शिक्षाविदों को मूल्यनिष्ठ शिक्षा और आध्यात्मिकता का संदेश दिया गया।

यह कार्यक्रम जारी

- विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के शिक्षाविदों के लिए महासम्मेलन
- उच्च माध्यमिक शिक्षकों के लिए विभिन्न सम्मेलन और ट्रेनिंग
- बच्चों और युवाओं के लिए साप्ताहिक ऑनलाइन कार्यक्रम
- रोटरी क्लब के साथ प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम, राजयोगा थॉट लैब कार्यक्रम

नागठाणे, महाराष्ट्र

देशभर में हुए कार्यक्रम	माह	कार्यक्रम	प्रतिभागी
	जनवरी	10	251904
	फरवरी	95	25315

6 आईटी प्रभाग

थीम: डिजिटल भारत से दिव्य भारत

आईटी में नए आयाम गढ़ते भारतीय

डिजिटल क्रांति ने विश्व को एक विलेज में बदल दिया है। एक क्लिक पर मनचाही सूचना प्राप्त कर सकते हैं। प्रभाग का मकसद है कि आईटी से जुड़े प्रोफेशनल्स की मेंटर हेल्थ को हेल्दी बनाने, माइंड मैनेजमेंट, इनर टेक्नोलॉजी आदि को लेकर देशभर में आईटी कंपनियों में सेमीनार और वर्कशॉप का आयोजन जारी है। ताकि उन्हें टेक्नोलॉजी के ज्ञान के साथ स्प्रीचुअल ज्ञान भी लि सके। इसके तहत जनवरी में हुए कार्यक्रम में 25000 प्रोफेशनल्स लाभांवित हुए। वहीं फरवरी में तीन सेमीनार हुए जिनमें 390 आईटी प्रोफेशनल्स को स्प्रीचुअल नॉलेज दिया गया।

यह कार्यक्रम जारी

- विभिन्न आईटी कंपनियों में सेमीनार और वर्कशॉप
- पूरे भारतवर्ष में डिजिटल अवेयरनेस कैंपेन
- मुख्यालय और रिट्रीट सेंटर्स पर आईटी रिट्रीट
- इनर टेक्नोलॉजी सहित अन्य विषयों पर ऑनलाइन ट्रेनिंग
- आईटी प्रोफेशनल्स के लिए तनावमुक्ति कार्यक्रम

बैंगलुरु

देशभर में हुए कार्यक्रम	माह	कार्यक्रम	प्रतिभागी
	जनवरी	01	250
	फरवरी	03	390

7 न्यायविद् प्रभाग

थीम: स्वर्णिम भारत में न्यायविदों की भूमिका

आध्यात्म के समावेश से न्याय व्यवस्था को मिलेंगे नए आयाम

न्यायविद् प्रभाग सभी के लिए समान न्याय, कर्तव्य और अधिकारों को लेकर जनसामान्य को जागरूक करने के लिए समर्पित है। साथ ही न्याय व्यवस्था से जुड़े न्यायाधीश, अधिकारी-कर्मचारी, एडवोकेट आदि को आध्यात्मिक संदेश के माध्यम से उत्तम न्याय व्यवस्था को स्थापित करना है। प्रभाग द्वारा जनवरी में 2 कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें 2500035 लोग लाभांवित हुए। फरवरी में 5 कार्यक्रम न्यायविदों के लिए अलग-अलग स्थानों पर आयोजित किए गए। इसमें 1100 न्यायविदों ने सहभागिता निभाई।

यह कार्यक्रम जारी

- सामाजिक और गैर सामाजिक संस्थानों के साथ न्यायविद् कार्यक्रमों का आयोजन
- न्यायविदों के लिए सम्मेलन, सेमीनार और स्नेह मिलन कार्यक्रम
- विशेष मूट कोर्ट का आयोजन
- प्रख्यात हस्तियों के साथ टॉक शो
- कानूनी छात्रों के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता

छतरपुर, मप्र

देशभर में हुए कार्यक्रम	माह	कार्यक्रम	प्रतिभागी
	जनवरी	02	2535
	फरवरी	05	1100

8 मीडिया प्रभाग

थीम: समाधान परक पत्रकारिता से समृद्ध भारत की ओर

मीडिया में बदलाव गढ़ेगा नया भारत

वर्तमान परिस्थितियों के हिसाब से आज देश में समाधान परक पत्रकारिता की जरूरत है। पश्चिमी देशों में नकारात्मक खबरों को प्रमुखता से स्थान दिया जाता रहा है जिसका अनुसरण भारतीय मीडिया ने भी किया है। हमारे देश में शास्त्रार्थ करके किसी समस्या का समाधान निकालने की परंपरा रही है। इसी उद्देश्य को लेकर आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत मीडिया प्रभाग द्वारा समाधान परक पत्रकारिता से समृद्ध भारत की ओर थीम पर सेमीनार आयोजित किए जा रहे हैं। जनवरी में देशभर में कुल 8 सेमीनार आयोजित गए। वहीं फरवरी में 15 सेमीनार आयोजित किए गए। इनमें 1489 मीडिया कर्मियों ने भाग लिया।

यह कार्यक्रम जारी

- प्रिंट, इलेक्टॉनिक एवं सोशल मीडिया के पत्रकारों और पीआरओ से संबंधित मीडिया संस्थाओं के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन
- मीडिया सेमीनार एवं संगोष्ठियां
- मीडिया डायलॉग एवं वर्कशॉप
- स्नेह मिलन

नई दिल्ली

देशभर में हुए कार्यक्रम	माह	कार्यक्रम	प्रतिभागी
	जनवरी	08	2578
	फरवरी	15	1489

9 राजनीतिक सेवा प्रभाग

थीम: गौरवशाली भारत के लिए राजनीति में दिव्यता

मूल्य और आध्यात्म के समावेश से राजनीति में आएगी दिव्यता

नैतिक मूल्यों का पतन जिस तेजी से राजनीति में हुआ है, उस हिसाब से समाज के अन्य वर्गों में नहीं हुआ है। समाज में बदलाव के लिए राजनीति केंद्रबिंदु है। ऐसे में जनसामान्य की निगाहें भी सकारात्मक बदलाव के लिए राजनीतिज्ञों की ओर रहती हैं। ऐसे में जनप्रतिनिधियों का चरित्र मूल्यों से परिपूर्ण होना बेहद जरूरी है। मूल्यनिष्ठ राजनीति को लेकर प्रभाग जुटा हुआ है। अभियान के तहत जनवरी में कुल 3 कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें 2500421 लोगों तक संदेश पहुंचा। वहीं फरवरी में 6 सेमीनार आयोजित किए गए। इनमें 2300 राजनीति से जुड़े जनप्रतिनिधियों ने भाग लिया।

यह कार्यक्रम जारी

- राजनीतिज्ञों के लिए मुख्यालय और रिट्रीट सेंटर्स पर महासम्मेलन
- सेमीनार और वर्कशॉप
- स्नेह मिलन कार्यक्रम
- ऑनलाइन वेबीनार

धनकबड़ी, पुणे

देशभर में हुए कार्यक्रम	माह	कार्यक्रम	प्रतिभागी
	जनवरी	03	25421
	फरवरी	06	2300

10 धार्मिक प्रभाग

थीम: एक ईश्वर एक विश्व परिवार

सर्वधर्म सम्मेलन से एकता का संदेश

धार्मिक प्रभाग सर्वधर्म समभाव की भावना को लेकर कार्य कर रहा है। प्रभाग द्वारा सर्वधर्म सम्मेलन, गीता महोत्सव, संत समागम और सम्मान समारोह आदि आयोजन किए जाते हैं। साथ ही देशभर के साधु, संत-महात्माओं को जोड़कर संत समागम सम्मेलनों का आयोजन करना है। प्रभाग द्वारा जनवरी में 4 कार्यक्रम आयोजित किए गए। वहीं फरवरी में 22 कार्यक्रम देशभर में हुए जिनमें 4303 संत-महात्माओं, योगाचार्य, योग शिक्षक, महामंडलेश्वर, शंकराचार्य ने भाग लिया। वास्तविकता में विश्व की सभी आत्माओं और धर्मात्माओं के परमपिता एक ही परमात्मा हैं।

यह कार्यक्रम जारी-

- विभिन्न धर्माचार्यों एवं सर्वधर्म के महान आत्माओं के साथ मिलकर सर्वधर्म समागम का आयोजन
- महामंडलेश्वर, शंकराचार्य, संत और महात्माओं का अलग-अलग शहरों में सम्मान समारोह व सम्मेलनों का आयोजन
- जनों फॉर फ्रीडम अभियान- स्वस्थ-स्वच्छ और मुक्त समाज का निर्माण

जयपुर

देशभर में हुए कार्यक्रम	माह	कार्यक्रम	प्रतिभागी
	जनवरी	04	25340
	फरवरी	22	4303

11 वैज्ञानिक एवं अभियंता प्रभाग

थीम: आत्मनिर्भर भारत में इंजीनियर्स की भूमिका

मन की इंजीनियरिंग समझना जरूरी

आध्यात्म के बिना विज्ञान अधूरा है और विज्ञान के बिना आध्यात्म अधूरा है। वैज्ञानिक शोधों से जुड़े वैज्ञानिकों, इंजीनियर और फील्ड से जुड़े अधिकारी-कर्मचारियों के आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिए प्रभाग जुटा हुआ है। दुनिया का सबसे कठिन कार्य है मन की इंजीनियरिंग समझना। हमने आधुनिक इंजीनियरिंग के बल पर भौतिक विकास तो बहुत कर लिया है लेकिन इसके साथ ही आध्यात्मिक विकास करना भी जरूरी है। प्रभाग द्वारा देशव्यापी अभियान चलाने की योजना बनाई गई है। इसके तहत जनवरी में दो बड़े कार्यक्रम आयोजित किए गए। वहीं फरवरी में पांच कार्यक्रम हुए, जिनमें 16824 लोगों ने भाग लिया।

देशभर में यह कार्यक्रम जारी-

- वैज्ञानिकों और इंजीनियर्स के लिए त्रिदिवसीय महासम्मेलन
- भारत के 4 क्षेत्रों में स्वर्णिम आत्मनिर्भर भारत अभियान
- राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर स्कूल-कॉलेजों में कार्यक्रम
- राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस पर अनेक संस्थाओं में कार्यक्रम
- विश्व वानिकी दिवस और विश्व जल दिवस पर कार्यक्रम
- वरिष्ठ वैज्ञानिकों और तकनीकिज्ञों का सम्मान समारोह

आबू रोड

देशभर में हुए कार्यक्रम	माह	कार्यक्रम	प्रतिभागी
	जनवरी	02	25480
	फरवरी	05	16824

12 सुरक्षा सेवा प्रभाग

थीम: स्व-सशक्तिकरण से राष्ट्र सशक्तिकरण

आत्मबल से होगी स्वयं, देश की रक्षा

सुरक्षा बलों, सेना के जवानों और पुलिसकर्मियों की ड्यूटी बहुत ही जिम्मेदारी पूर्ण और कठिन होती है। सुरक्षा सेवा प्रभाग का मकसद है कि सेना के जवानों और अन्य सुरक्षा से जुड़े कर्मियों के शारीरिक बल के साथ आत्मबल को बढ़ाकर उन्हें मानसिक रूप से सशक्त और मजबूत बनाना। आंतरिक शक्ति के विकास से जंग में फतह करने के लिए मानसिक रूप से तैयार करना। इसे लेकर सेना के विभिन्न बटालियन में प्रभाग द्वारा मोटिवेशनल वर्कशॉप आयोजित की जाती है। इस वर्ष अमृत महोत्सव के तहत जनवरी में पांच कार्यक्रम आयोजित किए गए। वहीं फरवरी में कुल 6 कार्यक्रम हुए। इनमें 15600 सुरक्षा बलों, सेना के जवानों आदि ने भाग लिया।

यह कार्यक्रम जारी-

- कई क्षेत्रों में कार यात्राओं के माध्यम से 150 से अधिक कार्यक्रम का आयोजन।
- शहीदों और जवानों का सम्मान समारोह।
- तनावमुक्ति एवं आंतरिक शक्ति के विकास पर कार्यक्रम।
- भारतीय सेना, नौसेना, बीएसएफ, सीआईएसएफ, आईटीबीपी, पुलिस स्टेशन, सीआरपीएफ, जेल आदि में कार्यक्रम।

ईदगाह, आगरा

देशभर में हुए कार्यक्रम	माह	कार्यक्रम	प्रतिभागी
	जनवरी	05	25118
	फरवरी	06	15600

13

महिला सेवा प्रभाग

थीम

महिलाएं- नए भारत की ध्वजवाहक

नारी को मुख्यधारा से जोड़ने की पहल

● विश्व की सबसे बड़ी महिलाओं द्वारा संचालित संस्था है ब्रह्माकुमारीज़, 46 हजार बहनें विश्व बदलाव में जुटीं

ब्रह्माकुमारीज के 20 प्रभागों में से एक महिला सेवा प्रभाग है। 20 जनवरी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महिलाएं- नए भारत की ध्वजवाहक अभियान को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। अभियान के तहत देशभर के संस्थान के सेवाकेंद्रों पर महिला अधिकारों, महिला सम्मान, महिला उत्थान, आध्यात्मिकता, राजयोग मेडिटेशन और उपरोक्त विषय पर कार्यक्रम जारी हैं। इसमें हजारों महिलाओं ने भाग लिया। जनवरी में 17 कार्यक्रम हुए। इनमें 2501720 लोगों ने भाग लिया। फरवरी में देशभर में 32 कार्यक्रम हुए जिनमें 4805 महिलाओं ने शिरकत की।

महिला उत्थान के लिए जारी सेवाएं-

- सम्मेलन और अभियान। महिला सशक्तिकरण द्वारा समाज परिवर्तन।
- बेटी बचाओ-सशक्त बनाओ। सुखी पारिवारिक जीवन के लिए मूल्य।
- स्पर्धाएं: रंगोली, मेंहदी, व्यंजन बनाना, क्विज आदि।
- संस्कार परिवर्तन एवं व्यवहार-आहार शुद्धि सेमीनार।

इंदौर

देशभर में हुए कार्यक्रम	माह	कार्यक्रम	प्रतिभागी
	जनवरी	17	25172
	फरवरी	34	5085

14

समाजसेवा प्रभाग

थीम

डिजिटल भारत से दिव्य भारत

सेवा से समाज को साधने में जुटे कर्णधार

जरूरतमंदों को कपड़ा-रोटी, स्वास्थ्य सुविधाएं और सहायता मुहैया कराना सबसे बड़ा पुण्य का कार्य है। ऐसे समाज के संरक्षकों को प्रभाग द्वारा एक मंच प्रदान किया जा रहा है। उनका सम्मान कर सामाजिक सेवाओं को सराहा जा रहा है। प्रभाग द्वारा स्वच्छता, पौधारोपण आदि सामाजिक कार्यों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है। जनवरी में प्रभाग द्वारा कुल 11 कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें 2501030 लोगों तक संदेश पहुंचा। वहीं फरवरी में 44 कार्यक्रम हुए। इसमें 12945 समाजसेवियों व समाज सेवा से जुड़े क्लब, संगठनों के लिए कार्यक्रम आयोजित किए गए।

यह कार्यक्रम जारी

- समाजसेवियों के लिए सेमीनार और सम्मान समारोह
- समाज सेवा के प्रति जागरुकता अभियान
- स्वर्णिम-सशक्त समाज रैली का आयोजन
- स्वच्छता, कोरोना बचाव और पौधारोपण पर आयोजन
- विश्व मानवता दिवस (19 अगस्त) पर समाज सेवियों के लिए दैवी संस्कारों द्वारा स्वर्णिम भारत का निर्माण विषय पर कॉन्फ्रेंस का आयोजन

रीवा, मप्र

देशभर में हुए कार्यक्रम	माह	कार्यक्रम	प्रतिभागी
	जनवरी	11	25103
	फरवरी	44	12945

15

स्पार्क प्रभाग

थीम

आध्यात्मिकता में शोध

आध्यात्म में शोध की नई विधा

आध्यात्म आत्मा के अध्ययन, चिंतन-मनन और उसकी गहराईयों में जाकर अनुभूति करने की एक अनंत यात्रा है। आध्यात्म की पहली शर्त ही है शोध। नित-निरंतर, नया। जैसे दुनिया में आज जो भी तमाम आविष्कार हुए हैं वह शोध का ही नतीजा है। वैसे ही आध्यात्म में जितना हम गहराई में उतरते जाते हैं तो अनुभवों रूपी खजाने से उतने ही समृद्ध और शक्तिशाली बनते जाते हैं। प्रभाग की ओर से जनवरी में तीन कार्यक्रम आयोजित किए गए। वहीं फरवरी में दो कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसमें 400 शोध से जुड़े वैज्ञानिकों, विद्यार्थियों आदि ने भाग लिया।

यह कार्यक्रम जारी

- भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय एवं मानव संसाधन विकास मंत्रालय से संबंधित विभागों के साथ सम्मिलित होकर अनेकानेक कार्यक्रमों का आयोजन, वर्कशॉप आदि
- आईआईटी, भारतीय विज्ञान संस्थान, डीआरडीओ आदि संस्थानों में सेमीनार, सम्मेलन और संवाद
- वैज्ञानिकों के लिए रिट्रीट सेंटर्स में विशेष रिट्रीट का आयोजन

कल्याण, महाराष्ट्र

देशभर में हुए कार्यक्रम	माह	कार्यक्रम	प्रतिभागी
	जनवरी	03	25140
	फरवरी	02	400

16

खेल प्रभाग

थीम

खेलेगा इंडिया तो जीतेगा इंडिया

स्प्रीचुअलिटी से बढ़ती है माइंड पॉवर

खेल जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। खेल प्रभाग द्वारा खेलेगा इंडिया तो जीतेगा इंडिया थीम पर देशभर में कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसके तहत मोटिवेशनल वर्कशॉप के माध्यम से खिलाड़ियों की मेंटर हेल्थ को स्ट्रांग बनाने के लिए उन्हें स्प्रीचुअलिटि पॉवर, माइंड मैनेजमेंट और माइंड पॉवर जैसी टेक्नीक सिखाई जा रही हैं। प्रभाग द्वारा जनवरी में 16 कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसमें 2500752 लोग लाभांवित हुए। वहीं फरवरी में चार कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसमें 722 खिलाड़ियों को मोटिवेट किया गया।

यह कार्यक्रम जारी-

- मुख्य शहरों में मैराथन/हॉफ मैराथन/मिनी मैराथन
- राइड फॉर राजयोगा अवेयरनेस- बाइक रैलियां
- खिलाड़ियों के लिए माइंड पावर ट्रेनिंग
- खेल दिवस, ओलंपिक दिवस पर विशेष कार्यक्रम
- खिलाड़ियों के लिए सम्मान समारोह

अमरेली, गुजरात

देशभर में हुए कार्यक्रम	माह	कार्यक्रम	प्रतिभागी
	जनवरी	16	25752
	फरवरी	04	722

17 यातायात एवं परिवहन प्रभाग

थीम

सड़क सुरक्षा मोटर साइकिल यात्रा

सड़क सुरक्षा का ज्ञान ही जीवनदान

देश में हर साल सड़क दुर्घटना में लाखों लोग मारे जाते हैं। असमय होने वाली सड़क दुर्घटनाओं को रोकने और सड़क सुरक्षा का संदेश देने के लिए प्रभाग द्वारा देशभर में कई अभियान चलाए जा रहे हैं। शोध में सड़क दुर्घटना का एक कारण ध्यान भटकना या तनाव भी सामने आया है। मानसिक रूप से परिवहन से जुड़े लोगों को सशक्त करने के लिए प्रभाग द्वारा सेमीनार और वर्कशॉप का आयोजन जारी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आबू से दिल्ली सड़क सुरक्षा मोटर साइकिल यात्रा को रवाना किया था। जनवरी में प्रभाग द्वारा दो कार्यक्रम किए गए वहीं फरवरी में भी दो कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसमें यातायात एवं परिवहन से जुड़े 300 लोगों ने भाग लिया।

यह कार्यक्रम जारी-

- सड़क सुरक्षा के लिए 75 शहर/तहसील में जागृति अभियान
- प्रत्येक रैली में 75 यात्री भाग लेंगे
- भारत के ऐतिहासिक स्थलों से शुभारंभ और समापन
- स्कूल, कॉलेज, आरटीओ, पुलिस स्टेशन, पेट्रोल पंप आदि स्थानों पर कार्यक्रम
- स्पीड, सेफ्टी और स्प्रीचुअलिटी का संबंध समझाया जाएगा

नरैना, जयपुर

देशभर में हुए कार्यक्रम	माह	कार्यक्रम	प्रतिभागी
	जनवरी	02	10000
	फरवरी	02	300

18 शिपिंग, एवीएशन एवं टूरिज्म प्रभाग

थीम

मेरा देश मेरी शान अभियान

'अनदेखा भारत' साइकिल रैली को प्रधानमंत्री ने किया रवाना

देश में सैकड़ों ऐसे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हैं जो गुप्त हैं। जिन्हें ज्यादातर लोग जानते ही नहीं हैं या उनकी वीरता को भुला दिया गया है। ऐसे आजादी के सच्चे भारतीय नायकों को याद करने और उनकी याद में सम्मान समारोह आयोजित करने का पुण्य कार्य प्रभाग द्वारा किया जा रहा है। साथ ही ऐतिहासिक विरासत स्थलों की गौरवगाथाओं से नव युवा पीढ़ी को रुबरु कराने, भारत की गौरवशाली परंपरा से परिचित कराने के लिए पदयात्राएं शुरू की जा रही हैं। अनदेखा भारत साइकिल यात्रा का शुभारंभ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया। जनवरी में पांच कार्यक्रम हुए। फरवरी में देश के अलग-अलग कोने में कुल सात कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसमें 6705 लोगों ने भाग लिया।

यह कार्यक्रम जारी-

- सच्चे भारतीय नायकों का सम्मान समारोह, आओ दो कदम चलें- विरासत स्थलों के लिए पदयात्राएं, मेरी संस्कृति मेरी पहचान- पारंपरिक वेशभूषा प्रतियोगिता
- भारत हमको जान से प्यारा है- प्रतिज्ञा पत्र/मातृभूमि को पत्र, साइकिल यात्राएं

भोपाल

देशभर में हुए कार्यक्रम	माह	कार्यक्रम	प्रतिभागी
	जनवरी	05	25178
	फरवरी	07	6705

19 युवा प्रभाग

थीम

सशक्त युवा-समृद्ध भारत

जागो! युवा जागो... युवा तू बन सर्व महान, तू है सारे जग की शान...

युवा देश के कर्णधार और भावी नियंता होते हैं। युवा शक्ति, साहस, ऊर्जा का वह केंद्रबिंदु होता है जिसमें आसमान को भी लांघने का सामर्थ होता है। युवाओं में छिपी प्रतिभा और शक्ति का एहसास कराकर उन्हें देशभक्ति और सकारात्मक कार्यों की ओर अग्रसर करना ही प्रभाग का लक्ष्य है। बस यात्रा से युवाओं को शांति का संदेश दिया जा रहा है। नशामुक्ति अभियानों से नशे के दलदल से निकालने का प्रयास है। जनवरी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बस यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। साथ ही 10 अलग-अलग कार्यक्रमों में 2500738 लोगों तक संदेश पहुंचा। वहीं फरवरी में देशभर में 13 कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसमें 9350 युवाओं ने भाग लिया।

यह कार्यक्रम जारी

- पावर ऑफ पीस- 75 शहरों में बस यात्रा। डिजाइन योर डेस्टिनी- 75 कार्यक्रम
- दिव्य यूथ फोरम- 75 स्व सशक्तिकरण विषय पर कार्यक्रम
- उठो जगत के वास्ते- फील्ड एक्टीविटी प्रोजेक्ट जैसे- स्वच्छता, ग्रीन सिटी प्रोजेक्ट, ब्लड डोनेशन कैंप आदि का आयोजन

बीना, मप्र

देशभर में हुए कार्यक्रम	माह	कार्यक्रम	प्रतिभागी
	जनवरी	10	25738
	फरवरी	13	9350

20 चिकित्सा प्रभाग

थीम

बाल स्वास्थ्य एवं कुपोषण मुक्त भारत

कोविड-19 वैक्सीन और जागरूकता अभियान का पहला चरण संपन्न

चिकित्सा प्रभाग द्वारा बाल स्वास्थ्य एवं कुपोषण मुक्त भारत अभियान पर केंद्रित कार्यक्रम देशभर के सेवाकेंद्रों पर आयोजित किए जा रहे हैं। अभियान के सकारात्मक परिणाम भी सामने आ रहे हैं और कई स्थानों पर लोगों ने ब्रह्माकुमारीज़ की इस मुहिम की जमकर सराहना की है। डॉक्टर, नर्सिंग स्टाफ आदि के लिए सभा सम्मेलन के माध्यम से स्ट्रेस फ्री लाइफ के बारे में विषय विशेषज्ञों द्वारा मोटिवेट किया जा रहा है। 20 जनवरी से 31 जनवरी तक देशभर में 15 कार्यक्रम हुए। इनमें 2501116 लोगों ने भाग लिया। फरवरी में 85 कार्यक्रम हुए, जिनमें 14284 लोगों को लाभ मिला।

अभियान के तहत चल रहीं सेवाएं-

- बाल स्वास्थ्य एवं कुपोषण मुक्त भारत अभियान के तहत स्कूलों में स्वास्थ्य शिविर
- सामाजिक संस्थाओं के साथ झुग्गी बस्तियों में पौष्टिक आहार का वितरण
- अभिभावकों के लिए बाल स्वास्थ्य और कुपोषण विषय पर कार्यक्रम
- स्वास्थ्य परीक्षण शिविर और मेला, राजयोग मेडिटेशन कैंप
- नशामुक्ति शिविर, पॉजीटिव थिंकिंग कोर्स, मेडिकल स्टाफ ट्रेनिंग प्रोग्राम

राउरकेला

देशभर में हुए कार्यक्रम	माह	कार्यक्रम	प्रतिभागी
	जनवरी	15	25116
	फरवरी	85	14284

महाशिवरात्रि पर शांतिवन मुख्यालय में आयोजन : 'स्वर्ण स्वर भारत' की टीम ने दी मनमोहक प्रस्तुति, शिव की साधना में संगीत और आध्यात्म की जुगलबंदी से बांधा समां

स्वरों की थिरकन और संगीत की धुन से सजी 'आध्यात्म की महफिल'

डॉ. कुमार विश्वास बोले- अब तो जो कार्यक्रम किए वह धरती पर हुए थे, आज का कार्यक्रम स्वर्ग में आयोजित हुआ, कैलाश खेर बोले- परमात्मा की भूमि पर हो रहा है संगीत और आध्यात्म का मिलन

शिव आमंत्रण, आबू रोड। स्वरों ने जब संगीत की धुन पर शिवमय तान छेड़ी तो आध्यात्म की महफिल सज उठी। सुरों की संध्या में शब्द कंठ से बाहर निकलते तो संगीत की जुगलबंदी से स्वर्ण रूप ले लेते। ऊं ध्वन और तालियों की गड़गड़ाहट से हॉल परमात्मा शिव की महिमा में गूंज उठा। मौका था ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय आबू रोड स्थित शांतिवन में महाशिवरात्रि पर स्वर संध्या का। देश के जाने-माने कवि डॉक्टर कुमार विश्वास और पद्मश्री गायक कैलाश खेर ने स्वरों का ऐसा रंग जमाया कि वह थिरकने लगे। परमात्मा शिव के अवतरण की 86वीं शिवजयंती का दिन संस्थान के लिए ऐतिहासिक रहा। रियलिटी शो स्वर्ण स्वर भारत की पूरी टीम शांतिवन पहुंची। कार्यक्रम में पूरे समय परमात्मा की महिमा के गीत गूंजते रहे। कार्यक्रम की शुरुआत में संस्था के वरिष्ठ बीके भाई-बहनों ने शिवलिंग पर पुष्प अर्पित किए। अपनी कविताओं से सबका दिल जीतने वाले डॉक्टर कुमार विश्वास ने संस्था की प्रशंसा करते हुए कहा कि मैंने अब तक हजारों प्रोग्राम किए लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ का ये आयोजन बिल्कुल अद्‌भुत और अलग है। ऐसा लग रहा है जैसे अब तक जो कार्यक्रम किए वो धरती पर हुए थे, लेकिन ये कार्यक्रम स्वर्ग में आयोजित हुआ है। यहां के वातावरण में शांति का आलम और आध्यात्मिकता की छंटा है, क्योंकि यहां हर कोई निःस्वार्थ सेवाभाव से कार्य करता है। इसलिए ये संस्था दूसरी संस्थाओं से बिल्कुल अलग है।

कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते अतिथि। प्रस्तुति देते कलाकार।

मुझे ऐसा लगा जैसे देवलोक में बैठे हैं- खेर

सूफी गानों से मशहूर पद्मश्री गायक कैलाश खेर ने हरि ओम ध्वनि का उच्चारण करते हुए कहा कि पृथ्वी पर एक ऐसा पर्वत है जहां स्वयं परमात्मा विराजमान हैं। वो है आबू पर्वत और वहां ब्रह्माकुमारीज़ का आश्रम है। ये बहुत ही सौभाग्य की बात है। आज सही माइने में संगीत और आध्यात्म का मिलन हुआ है। लोगों की भीड़ देखकर उन्होंने कहा कि लग रहा है वे देवलोक में बैठे हैं। ये आम जनसभा नहीं लग रही है। गायक खेर ने अपने गीतों से सबका मन जीत लिया।

स्वर्ण स्वर भारत का टाइटल सांग लांच

इस दौरान सिंगिंग रियलिटी शो स्वर्ण स्वर भारत का टाइटल ट्रैक का एंथम सांग भी लांच किया गया। इस वीडियो में स्वर्णिम भारत की परिकल्पना की तस्वीर दिखाई गई है। शो के प्रतिभागियों ने ईश्वर एक है, इस थीम पर अलग-अलग गीत गाए। कोई प्रतिभागी दक्षिण भारत से आया, तो कोई यूपी से, तो कोई अन्य प्रांत से, कोई हिंदू है तो कोई मुस्लिम है।

परमात्मा के ऊपर अपनी बुराइयां अर्पित करें

इस दौरान संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती ने कहा कि परमात्मा शिव ने हमें इस दुनिया में एक ऐसा जीवन दिया है। जिससे हमारे अंदर दिव्यता आ जाती है। इसलिए आज के दिन हम परमात्मा शिव के ऊपर अपनी बुराईयों को अर्पण करें। कार्यक्रम में संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी, महासचिव बीके निर्वैर, कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय, मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष बीके करुणा, जी टीवी की सीईओ अपर्णा भोंसले, अनुराधा भोंसले, फैथम पिक्सर्च के सीईओ राम मिश्रा, क्रिएटिव हेड सतीश, आबू रोड नपाध्यक्ष मगनदान चारण, विस के पूर्व उपमुख्य सचेतक रतन देवासी सहित बीके भाई-बहन उपस्थित रहे। संचालन सीनियर राजयोगा टीचर बीके अस्मिता ने किया।

अव्यक्त लोक का लोकार्पण] भारतीय नौसेना के उपप्रमुख वॉइस एडमिरल एसएन घोरमडे ने अपने आध्यात्मिकअनुभव किए सांझा

परमात्मा से कामना है कि जल्द विश्व में शांति हो, यूक्रेन और रूस के बीच युद्ध समाप्त हो: भारतीय नौसेना उपप्रमुख घोरमडे

ब्रह्माकुमारीज की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी की प्रथम पुण्य स्मृति पर हजारों लोगों ने अर्पित किए श्रद्धासुमन

- दिव्यता दिवस पर अव्यक्त लोक का लोकार्पण

शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी (दादी गुलजार) की स्मृति में नवनिर्मित स्मृति स्तंभ अव्यक्त लोक का दादी की प्रथम पुण्यतिथि दिव्यता दिवस पर शुक्रवार को लोकार्पण किया गया। सुबह 8 बजे सबसे पहले संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका बीके मोहिनी, सचिव बीके निर्वैर भाई, संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके मुन्नी दीदी द्वारा दादी गुलजार को पुष्पांजली अर्पित की गई। इसके बाद अन्य वरिष्ठ भाई-बहनों सहित देश-विदेश से आए हजारों भाई-बहनों ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। यह सिलसिला दिनभर चलता रहा। बता दें कि 11 मार्च 2021 को ब्रह्माकुमारीज की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी का मुंबई के सैफी हॉस्पिटल में देवलोकगमन हो गया था।

दिव्यता दिवस पर दादीजी की स्मृति में आयोजित कार्यक्रम में कई पुरस्कारों से सम्मानित भारतीय नौसेना के उपप्रमुख वॉइस एडमिरल एसएन घोरमडे ने कहा कि आज ब्रह्माकुमारीज संस्थान के इस अंतरराष्ट्रीय मंच से मैं यही कामना करता हूं कि जल्द विश्व में फिर से शांति हो। यूक्रेन और रूस के बीच रहा युद्ध जल्द समाप्त हो। जब यूक्रेन और रूस के बीच युद्ध शुरू हुआ तो इस दौरान मुझे रशिया जाने का मौका मिला तो मैंने वहां भी परमात्मा से शांति की कामना की। मेरी यही शुभभावना है कि जल्द से जल्द दोनों देशों में शांति हो और युद्ध समाप्त हो। जिस तरह ब्रह्माकुमारीज संस्था विश्व शांति को लेकर कार्य कर रही है, निश्चित ही एक दिन वह अपने मिशन में सफल होगी।

दादी गुलजार की स्मृति में बने अव्यक्त लोक में श्रद्धासुमन करते हुए दादियां और वरिष्ठ बीके भाई-बहनें।

दादीजी का संपूर्ण जीवन दिव्यता से परिपूर्ण रहा

संस्थान के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय भाई ने कहा कि आज के दिन को हम दिव्यता दिवस के रूप में मना रहे हैं। क्योंकि दादी गुलजार का संपूर्ण जीवन दिव्यता से परिपूर्ण था। दिव्यता ही दुनिया की ऐसी शक्ति है जिसके द्वारा हम संपूर्ण मानव जाति को नई दुनिया, नया समाज बना सकते हैं। आज के दिन ब्रह्माकुमारीज के विश्वभर में स्थित सेवाकेंद्रों पर दिव्यता दिवस पर दादी की स्मृति में पुष्पांजली अर्पित की गई।

नौसेना उपप्रमुख घोरमडे ने कहा कि वर्ष 2011 में मुझे पहली बार माउंट आबू आने का मौका मिला। इसके बाद मैंने ब्रह्माकुमारीज में सिखाए जाने वाले राजयोग मेडिटेशन का कोर्स किया। तब से लेकर मैं नियमित सुबह 4 बजे से राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करता हूं। साथ ही नियमित आध्यात्मिक सत्संग (मुरली क्लास) अटेंड करता हूं। मैं खुद को भाग्यशाली समझता हूं कि मुझे दादी गुलजार जी से मिलने का मौका मिला। जब भी दादीजी से मिलता तो एक अलग ही दिव्य अनुभूति होती थी। दादीजी कहती थीं कि सदा खुश रहो और खुशी बांटो। सदा सभी को खुशी की मिठाई खिलाओ। राजयोग मेडिटेशन के नियमित अभ्यास से मेरी कार्यक्षमता बढ़ गई है। आध्यात्मिक पथ पर चलने से मेरा जीवन बहुत ही संयमित और आनंददायक हो गया है। संस्थान के सचिव बीके निर्वैर भाई ने कहा कि दादीजी का जीवन लाखों भाई-बहनों के लिए मिसाल था। न्यूयार्क में ब्रह्माकुमारीज की निदेशिका व संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका बीके मोहिनी दीदी ने कहा कि दादीजी का एक-एक कर्म उदाहरणमूर्त था।

दादीजी बहुत ही नम्रचित्त थीं: डॉ. निर्मला

माउंट आबू स्थित ज्ञान सरोवर अकादमी की निदेशिका डॉ. निर्मला दीदी ने कहा कि दादी गुलजार बहुत ही नम्रचित्त थीं। बाबा का जो भी आदेश होता था तो तुरंत उसे करने में जुट जाती थीं। बाबा का कहना और दादी का करना। यह दादी के जीवन का मूलमंत्र रहा। लंदन में ग्लोबल को-ऑपरेशन हाऊस की निदेशिका बीके जयंती दीदी ने कहा कि दादीजी ने ताउम्र परमात्मा का संदेशवाहक बनकर अथक सेवाएं कीं। दादीजी ने अपना सारा जीवन विश्व की सेवा में लगा दिया। रशिया के सेवाकेंद्रों पर सेवाएं दे रहीं बीके सुधा दीदी, डॉ. अशोक मेहता, बीके चार्ली भाई ने भी अपने विचार व्यक्त किए। मंच संचालन रशिया के सेवाकेंद्रों की निदेशिका बीके संतोष दीदी ने करते हुए दादीजी के साथ के अपने अनुभव को सांझा किया।

डॉक्टर शुक्ला- दादी के चेहरे पर कभी शिकन नहीं देखी

दादी गुलजार का मुंबई में इलाज करने वाले डॉ. आकाश शुक्ला ने कहा कि जब पहली बार दादीजी से मिला तो ऐसा अनुभव हुआ कि मैं एक दिव्य आत्मा से मिल रहा हूं। दादी से मिलने के बाद मेरा जीवन पूरी तरह बदल गया। मैंने दादीजी को देखा कि उनमें गजब का संयम, धैर्य था। जब भी मैं दादी को देखने जाता था तो वह इंतजार करते हुए मिलती थीं। कई दादी ने यह नहीं कहा कि आप लेट क्यों आए। मैं तीन साल में दादी के इलाज के दौरान कम से कम तीन सौ बार मिला। इस दौरान मात्र दादी ने दो सौ शब्द ही बोले थे। कम बोलो, धीरे बोले और मीठा बोलो इस महावाक्य की दादी साक्षात जीती जागती मिसाल थीं। दादी की अपने शरीर के ऊपर पूरा नियंत्रण रहता था। इतने कष्ट के बाद भी दादी के चेहरे पर कभी शिकन नहीं देखी। वह हमेशा शांत रहती थीं। डॉ. रवि गुप्ता ने कहा कि मैंने दादीजी को बिना एनेस्थेसिया दिए एंडोस्कोपी की। यह मेरे जीवन का पहला अनुभव था। उस दिन मुझे बहुत ही दिव्य अनुभूति हुई।

भगवान हमारा साथी है इसे साकार में महसूस करता हूं

शिव अग्रवाल

व्यवसायी, खरसिया, छग

बहुत सारी परिस्थिति आयी, सब को पार करते-करते आज एक अच्छे पुरुषार्थी जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। व्यक्ति कड़ी मेहनत और लगन के दम पर कुछ भी हासिल कर सकता है। खास कर जब वह आत्मा परमात्मा को अपना साथी मानकर चल रहा हो तब तो बात और ही आसान हो जाती है। इसी बात को साकार करते हुए छत्तीसगढ़ के व्यवसायी शिवम अग्रवाल ने अपना अनुभव सुनाया।

शरीर के पिता को नहीं देखा

मेरे शरीर का नाम शिव अग्रवाल है। वैसे तो मेरा जन्म एक छोटे से गांव में हुआ था। बचपन चार साल का जब मैं था तभी पिताजी का स्वर्गवास हो गया। मैंने अपने पिताजी को कब देखा ध्यान में नहीं है। अब मैं बाबा को ही अपना सब कुछ मानता हूं। 1984 में मैंने अपना होश संभाला जब मैं थोड़ा युवा हुआ। जब हमारे पास कुछ भी नहीं था, सब भगवान की कृपा से, बाबा के आशीर्वाद से धीरे-धीरे हम बढ़ते गए। बहुत सारी परिस्थिति आयी, सब को पार करते-करते आज एक अच्छे पुरुषार्थी जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

1997 में मैंने अपना बिज़नेस चालु किया। वैसे तो 1984 में छोटा मोटा ट्रेडिंग का काम करता था, लेकिन उद्योग में मैं 1997 में गया। राइस मिल की स्थापना की। एक पार्टनरशिप में राइस मिल शुरू किया। दो तीन साल चलाने के बाद उसको छोड़ा। फिर एक साथ तीन मिल किराये में लिए, उसको हमने छोड़ा। आज भगवान की कृपा से सब कुछ है अपने पास। राइस मिल है जिसे परमपिता परमात्मा की राइस मिल मानता हूं, मैं तो एक निमित्त मात्र हूं, मैं सेवा कर रहा हूँ यह मानता हूँ।

सात दिन के कोर्स के बाद एक आत्मिक लगाव हुआ

10 साल पहले ब्रह्माकुमारीज का कोर्स कर ज्ञान में आया। मुझे सत्य ज्ञान लगा और मैं उन सबको मानते चला गया। सातों दिन में एक दिन भी मैंने कोई प्रश्न नहीं किया क्योंकि पहले दिन ही निश्चय हो गया। बहनजी ने जो परमात्मा के माध्यम से सुनाया उसे बस स्वीकार कर लिया। बहन जी की ख़ासियत थी वो मेरे घर में आकर ज्ञान सुनाई। 3-4 किलोमीटर पैदल चलकर आती थी और ज्ञान सुनाती थी। उस समय हम नहीं जानते थे ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के बारे में। जैसे ही कोर्स पूरा हुआ एक आत्मिक लगाव हुई। घर में भी पहले वातावरण टेंशन का रहता था, लेकिन जैसे ही बाबा के बने, मैंने रेगुलर क्लास चालु की। रेगुलर मुरली सुनना और योग लगाना चालु किया। स्थिति परिस्थिति सुधरने लगी। एक दिन परमात्म मिलन का दिन था। मैं फ़्लाइट से उसी दिन आया तब मेरे आंखों में आंसू थे, भगवान मुझे ऐसे मिले जैसे सही में हज़ारों साल से बिछड़ा हुआ था और मुझे ऐसा लगा की मैं बाबा की गोद में जाकर सो गया। बाबा ने मुझे इतना प्यार दिया कि मैं तो उसका कल्पना भी नहीं कर सकता।

बाबा का बैज से सुरक्षा जांच में मिली मदद

नोट बंदी के समय बहुत सी चेकिंग चलती थी सरकार की तरफ़ से। कोई भी 2, 4, लाख पांच लाख लेके इधर उधर ट्रेडिंग करता था उसके प्रति सरकार की तरफ़ से बहुत कराई थी। संयोग से उसी समय मुझे रायपुर से फ़्लाइट में दिल्ली जाना था और मेरे पास बहुत पैसे थे तब मैं बाबा को याद किया। बाबा ये धड़ापकड़ी चल रहा है और मैं इतना रुपया लेकर जा रहा हूँ दिल्ली। अब आप हीं संभलना, मेरा तो कोई नहीं है। जैसे ही मैं रायपुर एयरपोर्ट में इन किया तो वहां जो चेकिंग होती हैं वहां मैं बाबा को याद करता जा रहा था। मेरे पास एक बैग था और बेग मैंने लगेज में डाल दिया था, जो रुपया वाला बेग मेरे साथ में था। बाबा अब आप ही संभालना। मैं जैसे ही सुरक्षा विभाग में जाने वाला था तो वहां जो भाई थे जो जांच करते हैं उन्होंने मुझे इशारे से कहा आप उधर से जाओ, दूसरे सुरक्षाकर्मी के पास उन्होंने मुझे भेज दिया, क्या मालूम बाबा का ही ये कमाल था वहां मैं जैसे ही गया दूसरे सूरक्षाकर्मी के पास उसने मेरा बैज देखा और कहा ओम शान्ति। उन्होंने मेरी चेकिंग नहीं की और बल्कि उन्होंने मुझे बोला की भगवान से हमारे लिए भी प्रार्थना करना। मैंने बाबा को उसी समय थैंक्यू बोला और मैं दिल्ली पहुंच गया और अपना काम करके आ गया। ये बाबा की कमाल थी, दूसरा और कोई नहीं कर सकता था।

तीन लोग में एक शिव बाबा भी हैं-

वर्तमान में अभी मैं जिला चावल उद्योग का प्रेसिडेंट भी हूं। हमारे जिले में 200 राइस मिल है, जिस एरिया का मैं प्रेसिडेंट हूं वहां एक बार संकट आया की चावल जमा करने के लिए जगह नहीं है। हम लोग गवर्मेंट का काम करते हैं। सरकार जो मुफ़्त में चावल बांटती हैं वो हमलोग सरकार को देते हैं, तभी सरकार उसको बांट सकती है। तो हम एक सहयोगी हैं, सेवा करते हैं गरीबों की। तो एक दिन ऐसी मीटिंग हुई हमारे शहर में जगह नहीं है चावल जमा करने के लिए रैक लगवाना है तो बिलासपुर जाना पड़ेगा। तो मैंने कहा चलो चलते हैं। दो आदमी हम लोग तैयार हुए। तो दो आदमी हम लोग जा रहे थे तो मेरे मुँह से वहा निकला हमलोग तीन जने हैं। तो मेरा जो साथी था बोला हम तो दो ही हैं। मैंने बोला मेरे साथ भगवान भी ही है, मेरे कंधे पे यहां पर बैठा है, वो भी जा रहा है। तो वह हंसने लगा। मुझे पागल बताने लगा। कहा क्या हो गया है तेरे को? मैंने बोला सही में तीन आदमी है और हम ट्रेन में सवार हो गए। ट्रेन में सवार हुए तो उस ट्रेन में भी जैसे ही बैठे तो एक सीट को मैंने, ख़ाली थी सीट तो मैंने कहा ये सीट पर बाबा बैठेंगे, यहां मैं बैठूँगा, यहां आप बैठना, उनको ऐसे ही बोला। उन्होंने कहा तू मज़ाक मत कर। भगवान हमारे साथ कैसे जा सकते है?

भगवान हमारे साथ कैसे जा सकते हैं?

मैंने बोला जा रहे हैं भगवान हमारे साथ, आप यकीन मानो। वो मेरे बात पर विश्वास नहीं किया। दूसरे स्टेशन पर हमारे साथी हैं और चढ़े, उनको भी जाना था हमारे साथ बिलासपुर। वो जैसे चढ़े मैंने बोला अब चार हो गए। तीन हम आत्मा और एक परमात्मा तो चार हो गए तो वो भी हंसने लगा। जो पहला साथी था बोलने लगा कि ये जब से बैठा हैं तब से बोल रहा है भगवान हमारे साथ जा रहा है, इसका दिमाग़ फिर गया है। मैंने फिर बोला भगवान हमारे साथ जा रहा है और जहां हम जा रहे हैं उससे मैं कभी मिला नहीं हूं, लेकिन जाते साथ वो आत्मा ये बोलेगी, बोलेगा कि मैं आपसे मिला हूं। मैं आपसे पहले कभी मिला हूँ। ये शब्द वो बोलेंगे। मेरे मन में इतना विश्वास था। मैं भी वह ऑफिस कभी नहीं गया था। 5000 साल पहले मिले थे वो अलग मुद्दा है।

परमात्मा का ही कमाल है दूसरा कोई नहीं कर सकता

हम लोग जैसे ही गए उनके पास बड़े ऑफिसर थे रेलवे के। तो पर्ची भेजवाया हम लोगों के पास पांच मिनट के अंदर संदेश आ गया कि आप लोग अंदर आ जाइये। जैसे ही अंदर गया तो मैं बीच में बैठा। सबसे पहले वे ऑफिसर ने मुझसे कहा मैं आप से पहले कभी मिला हूँ। मेरे साथ वाले हंसने लग गया और कहा ये बात तो इसने ट्रेन में बोल दिया। मैंने बोला जी सर मिले हैं पहले भी और 5000 साल पहले भी इसी जगह पर इसी अड्रेस पर। फिर मैं उनसे निवेदन किया कि हम सरकार का काम करते हैं, गवर्मेंट का अनाज बाहर में पड़ा सड़ रहा है। हम आपसे निवेदन करने आए हैं कि आप हमें रेक दे दीजीए जिससे अनाज जो बाहर में पड़ा है बारिश में भीग के ख़राब होता है वो सेफ़ हो जाए। उसने ओके बोल कहा कि मैं कुछ करता हूं। तीनों उठ कर जाने लगे। जैसे ही हम रेलवे स्टेशन पहुंचे, उनका कॉल मेरे फ़ोन पे आया कि आपको रेक देने का आर्डर दे दिया गया है मुश्किल से दस मिनट के अंदर उनका जवाब आ गया। आप कल सुबह लोडिंग कर सकते हैं। मेरे साथी आश्चर्यचकित हो गए कि ये तो बाबा का ही कमाल है दूसरा कोई नहीं कर सकता था।

आध्यात्म
की ओर बढ़ते सितारे

मेरे साथ पति का एक्सीडेंट में मेरा बचना मुझे गिल्ट फिल करा रहा था

दो साल से ब्रह्माकुमारीज से जुड़ा हूं। परमात्मा के साथ उन अनुभवों को शेयर कर रही हूं जिनकी वजह से मेरे लाईफ ही बदल गया। जब मैं अपनी लाईफ में बहुत ही निराश और हताश हो गयी थी तब बाबा की नजर मुझ पर पड़ी। बाबा ने मेरा हाथ थाम लिया और कहा बच्चे ये तेरा नया जन्म है। पास्ट को फुलस्टॉप लगाओ और आगे बढ़ जाओ। बाबा का दिया ये नया जन्म बाबा की सेवा अर्थ ही लगे यही जीवन का लक्ष्य है।

2017 में मेरे पति ने एक एक्सिडेंट में अपना शरीर छोड़ दिया था। उस दौरान मैं भी उनके साथ थी। मेरी कंडीशन उस समय ज्यादा क्रिटिकल थी। मेरे भी चांसेज बचने के बहुत कम थे लेकिन भगवान को कुछ और ही मंजुर था तो मैं बच गयी। लेकिन जब मुझको होश आया तो मुझे ये भी नहीं पता था कि मेरे जो युगल हैं वो शरीर छोड़ चूके हैं। लेकिन जब मुझे होश आया तो मुझे वो सब कुछ फेस करना पड़ा। मैं समझ ही नहीं पा रही थी कि ये मेरे साथ हुआ क्या? मेरे साथ इतना ज्यादा गिल्ट आ गया कि मैं क्यों बच गयी वो क्यों चले गये। मैं ही क्यों बची? इतना गिल्ट आ रहा था मेरे अन्दर और क्वेश्चन उठ रहे थे कि हमारे ही साथ ऐसा क्यों हुआ! और जो क्यूश्चन उठ रहे थे वे उठने भी स्वाभाविक थे क्योंकि जो मेरे यूगल थे वो बहुत ही आध्यात्मिक और पुजापाठी थे और दानपुन्न करने में बहुत आगे थे। मन्दिर में बजरंगबली जी की बड़ी मुर्ती लगवानी हो, साई बाबा के भण्डारे लगवाने हो और दूसरों की मदद के लिए सबसे आगे। ये मुझे लग रहा था कि ये मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ। भगवान अच्छे इंसानों के साथ ही ऐसा क्यों करता है? यही बातें मेरे मन में चल रही थी। इन सब बातों को लेकर मैं बहुत ही परेशान रहने लगी। इतनी ज्यादा परेशान रहने लगी कि मेरी मानसिक संतुलन बहुत ज्यादा बिगड़ने लगी और मैं प्रेशर में आ गयी फिर मेरा काफी ट्रीटमेंट भी चला और घर वाले भी मेरी वजह से अशांत थे क्योंकि मैं शांत ही नहीं हो रही थी। घर वालों ने कहा कि चलो हवन कराते हैं किसी पंडित जी को दिखाते हैं ताकि इसका मन शान्त हो। हर तरह की कोशिश की गयी मैं इस हादसे से उबर पाऊं पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। मेरा मन जो था वो शांत नहीं हो रहा था बिलकुल भी। उसी दौरान एक बार मैं शिवानी दीदी की क्लास देख रही थी। मुझे कुछ खास इंटेरेस्ट नहीं था बस देख रही थी। हमने उस जगह को चेंज करके जिस सोसाइटी में हम लोग आए तो वहां पर पता चला कि नीचे क्लब हाउस था जहां पर गीता पाठशाला चलती है। कुछ भाई-बहन मिलकर गीता पाठशाला चलाते हैं। मुझे लगा कि मुझे वहां पर जाना चाहिए। मै वहां गयी, वहां की दीदी जी ने मुझे कोर्स कराया। मैंने अभी कोर्स पूरा कम्पलीट नहीं किया था कि मुरली क्लास सुननी शुरू कर दी थी थोड़ी-थोड़ी। तीन चार चैप्टर ही किये थे लेकिन जब सीढ़ी वाला चित्र दीदी करा रही थीं तो जब मैं वो चैप्टर कर रही थी तो मैं कई साल पीछे पहुंच गयी। कई सालों से एक ही सपना बहुत ज्यादा आता था। एक ही सपना जो बार बार आता था। जब सीढ़ी वाला कोर्स का चित्र देख रही थी तो ओ! हो! उस टाइम मुझे ज्ञान नहीं था कि ब्रह्मा बाबा कौन हैं और इसके संबंध में मुझे ज्ञान ही नहीं था। उतरती कला का सही मतलब मुझे ज्ञान में आकर पता चला।

मीनाक्षी, उत्तरप्रदेश

“आफरीन लेने के लिए स्वयं को खुद ऑफर करो!”

संपादकीय

विश्व में सभी देशों के आपसी सहयोग से ही होगी शांति

इन दिनों पूरे विश्व की निगाहें रूस और यूक्रेन में चल रहे युद्ध पर टिकी हुई हैं। युद्ध के दौरान दोनों ही देशों की सेना के जवानों के साथ आम लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी है। यही नहीं यूक्रेन के कई शहर तबाह हो चुके हैं। बहरहाल जो भी हो लेकिन इतना तो तय है कि किसी भी क्षेत्र में शांति और विकास युद्ध से नहीं बल्कि आपसी बातचीत और भाईचारा से ही होगी। जान चाहे किसी की भी जाये लेकिन मरेगी मानवता। दुनिया का प्रत्येक मनुष्य परमात्मा की संतान है। इसलिए हर एक को शांति और सुकून के लिए प्रार्थना करना चाहिए। किसी भी युद्ध का कारण केवल अहंकार और लालच होती है। यदि व्यक्ति इन अवगुणों का त्याग करे तो इस दुनिया से नफरत, हिंसा और अत्याचार और व्यभिचार समाप्त हो जाएगा। क्योंकि सभी समस्याओं की जड़ यही है। इसलिए हमें कभी भी युद्ध का रास्ता नहीं अपनाना चाहिए। इससे शांति और विकास दोनों ही तहस-नहस होता है। परमात्मा का संदेश है कि जीवन में प्रत्येक व्यक्ति को शांति और प्रेम को बढ़ावा देना चाहिए। आने वाली दुनिया परमात्मा स्थापित कर रहा है। यह तो होना ही है परन्तु हमें आपसी सौहार्द्र और भाईचारा को बढ़ावा देकर ही किया जा सकता है। इसके लिए प्रयास भी करना चाहिए। यही परमात्मा का संदेश है। दूसरा वर्तमान समय में पूरे विश्व में शांति बनाये रखने के लिए परमात्मा से प्रार्थना करें और ध्यान साधना करें।

सशक्त मानसिकता बहुत महत्वपूर्ण है

मेरी कलम से...

सुस्मिता सेन
अभिनेत्री, मुंबई

☑ आत्मा-परमात्मा को जानने के लिए मैंने सोचा इसी बहाने आध्यात्मिक डिस्कशन कर लेते हैं। राजयोग सीख लेती हूं।

☑ हमारे पास कोई विकल्प नहीं है मन को व्यर्थ सोचने का।

मैं ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान से प्रेरित हूं। सिस्टर शिवानी ने मुझसे एक बहुत सुंदर चीज कही कि अधिकतर समय वे भावनात्मक तनाव और डिप्रेशन के बारे में एक बड़ी भूल करते जा रहे हैं। जो आज पूरे विश्व को जकड़ता जा रहा है। नकारात्मकता भी एक अदृश्य महामारी है जो बहुत ही बड़ी बीमारी है। आपके मन की स्थिति एक बहुत शक्तिशाली साधन है। आप उसका उपयोग किस तरह से करते हैं चाहे लॉकडाउन होता या नहीं होता। चाहे वायरस हो या न हो। मैं जान बुझकर इस वायरस का नाम कहीं भी कभी नहीं नहीं लेती। क्योंकि मुझे इस वायरस का नाम लेकर महत्व देना पसंद नहीं है। इतना महत्व कि उसकी अपनी एक पहचान बन जाए और उसमें यह क्षमता होती है कि वह बहुत शक्तिशाली बन जाए क्योंकि हर कोई इस समय इसे एक नाम दे रहा है तो अवश्य ही यह एक वायरस है। और मैं आपको यह सब इसलिए बताना चाहती हूं कि एक मेरी बहुत प्यारी सहेली है अमेरिका में हैं जिनको यह वायरस हुआ और उनके घर वाले बहुत परेशान थे। साथ में उनकी उम्मीदें मात्र 50 प्रतिशत खुद के लिए नकारात्मक थी। फिर भी उन्होंने सही यह कहा कि हां अब तो हो गया है बुखार आया है, ठंढ़ लग रही है, शरीर में बहुत दर्द भी है, खाने का टेस्ट चला गया है परंतु यह सब तो मेरे साथ बहुत बार हुआ है। मुझे वायरस हुआ, सर्दी-जुकाम, फ्लू तक हुआ है। सब चला जायेगा ठीक हो जायेगा, नो प्रोब्लम। मेरे पास इतना समय नहीं है कि यह सब के बारे में सोचता रहूं। चार हप्पते हो गए लेकिन यह किलियर हो गया कि वायरस ही है। लेकिन परमात्मा की दुआ से ठीक हो गई है। इसलिए सशक्त मानसिकता बहुत महत्वपूर्ण है। उससे यह सब सीखकर मैं बहुत बीजी रहती हूं। हम लोग को भी यह सब बोलना करना है। मेरे घर में दो प्यारी बच्चीयां वे भी बहुत बीजी रहती हैं। ऐसे वक्त में मुझे कुछ नया करना और सीखना चाहिए। लॉकडॉन के दौरान हमें तो पता चला बदलाव वक्त का नियम है। हमारे पास कोई विकल्प नहीं है मन को व्यर्थ सोचने का। जैसे उदाहरण के लिए मन बुद्धि का मेडिटेशन और आत्मा-परमात्मा को जानने के लिए मैंने सोचा इसी बहाने आध्यात्मिक डिस्कशन कर लेते हैं। राजयोग सीख लेती हूं। बच्चों के साथ में मैं भी किताबें पढ़ती हूं। और एक ऐसी दुनिया के बारे में सोचती हूं जो आने वाली है। भगवान आपका शुक्र है कि मैं इतनी भाग्यशाली हूं कि मैं जीवित हूं।

> “मैं जान बूझकर इस वायरस का नाम कहीं भी कभी नहीं लेती। क्योंकि मुझे इस वायरस का नाम लेकर महत्व देना पसंद नहीं है।”

बोध कथा/जीवन की सीख

जो प्राप्त है, पर्याप्त है

मन में जब तक चिन्ताओ का कूड़ा-कचरा और बुरे संस्करो का गोबर भरा है, तब तक उपदेशामृत का कोई लाभ न होगा।

एक बार एक स्वामी जी भिक्षा माँगते हुए एक घर के सामने खड़े हुए और उन्होंने आवाज लगायी, भिक्षा दे दे माते! घर से महिला बाहर आयी। उसने उनकी झोली मे भिक्षा डाली और कहा, "महात्माजी, कोई उपदेश दीजिए!" स्वामीजी बोले, "आज नहीं, कल दूँगा। कल खीर बना के देना।" दूसरे दिन स्वामीजी ने पुन उस घर के सामने आवाज दी - भिक्षा दे दे माते! उस घर की स्त्री ने उस दिन खीर बनायीं, जिसमे बादाम-पिस्ते भी डाले थे। वह खीर का कटोरा लेकर बाहर आयी। स्वामी जी ने अपना कमंडल आगे कर दिया। वह स्त्री जब खीर डालने लगी, तो उसने देखा कि कमंडल में गोबर और कूड़ा भरा पड़ा है। उसके हाथ ठिठक गए। वह बोली, "महाराज ! यह कमंडल तो गन्दा है।" स्वामीजी बोले, "हाँ, गन्दा तो है, किन्तु खीर इसमें डाल दो।"स्त्री बोली, "नहीं महाराज, तब तो खीर ख़राब हो जायेगी। दीजिये यह कमंडल, में इसे शुद्ध कर लाती हूँ।" स्वामीजी बोले, मतलब जब यह कमंडल साफ़ हो जायेगा, तभी खीर डालोगी न ?" स्त्री ने कहा "जी महाराज !" स्वामीजी बोले, "मेरा भी यही उपदेश है। मन में जब तक चिन्ताओ का कूड़ा-कचरा और बुरे संस्करो का गोबर भरा है, तब तक उपदेशामृत का कोई लाभ न होगा। यदि उपदेशामृत पान करना है, तो प्रथम अपने मन को शुद्ध करना चाहिए, कुसंस्कारो का त्याग करना चाहिए, तभी सच्चे सुख और आनन्द की प्राप्ति होगी।क्योंकि आपकी अच्छी सोच ही आपके कार्य को निर्धारित करती है। इसलिए सदैव प्रसन्न रहिये। जो प्राप्त है, पर्याप्त है।

संदेश: अपने मन को शुद्ध करना चाहिए, कुसंस्कारों का त्याग करना चाहिए, तभी सच्चे सुख और आनंद की प्राप्ति होगी। क्योंकि आपकी अच्छी सोच ही आपके कार्य को निर्धारित करती है। इसलिए सदैव प्रसन्न रहिये। जो प्राप्त है, पर्याप्त है।

उपराम स्थिति से कर्मातीत अवस्था तथा अव्यक्त स्वरूप

जीवन का मनोविज्ञान | भाग - 45

डॉ. अजय शुक्ला
बिहेवियर साइंटिस्ट, गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल
ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

☑ जीवन दर्शन के धर्म कर्म में उपराम स्थिति

जीवन का उच्चतम स्वरूप श्रेष्ठ संकल्प के द्वारा सृजित होता है जिसमें जीवन दर्शन का धर्म-कर्म व्यावहारिक गतिशीलता से मानव को नवदृष्टि प्रदान करता है। आत्मगत चेष्टा सदा साक्षी अर्थात उपराम स्थिति के लिए पुरुषार्थ में निष्ठावान रहती है और कर्म सिद्धांत स्वीकार करते हुए अग्रसर होने के साथ स्वयं को स्वतंत्र रखती है।

मुक्ति हेतु अकर्ता का भान स्वयं को कर्म जगत के वैचारिक एवं भावनात्मक स्वरूप से पूर्णतः निष्पक्ष रखता है जिसमें अच्छाई के अतिरिक्त शेष और अवशेष सदैव अनासक्त बने रहते हैं। सृष्टि रूपी रंगमंच पर अभिनय की बोधगम्यता आत्म जगत को आगमन एवं प्रस्थान बिंदु के मध्य विभिन्न परिस्थितियों के द्वारा शून्यता के साथ स्थिरता प्रदान करती है। परमसत्ता का आह्वान जीवन दर्शन के धर्म-कर्म, में उपराम स्थिति को अनहद नाद के व्यावहारिक स्वरूप में-सर्वधर्म समभाव, की श्रेष्ठता से जुड़ने हेतु अनवरत अभिप्रेरितकरते हैं।

आत्म दर्शन द्वारा आध्यात्म पुरुषार्थ से कर्मातीत अवस्था

मानव की गतिशीलता का आधारभूत पक्ष श्रेष्ठता के संदर्भ में होता है जिसको प्रासंगिक बनाने हेतु श्रेष्ठ विकल्प का चयन आत्मदर्शन के अध्यात्म-पुरुषार्थ मे सन्निहित रहता है। चेतना को सदा उत्कृष्टता की ओर अभिमुखित करते हुए कर्मातीत अवस्था के गहन रहस्य को आत्मसात करके अनासक्त भाव की प्रायोगिक स्थिति श्रेष्ठता से भी मुक्त कर देती है। मुक्ति की यथार्थता जीवन को सकारात्मक सहसंबंध से स्वतंत्र करने में मददगार होती है क्योंकि कर्म संबंध के प्रतिबिंब से साक्षी दृष्टा का पुरुषार्थ ही वास्तविक अध्यात्म है। आत्मिक स्मृति का बोध, निजता को व्यावहारिक बनाता है जिसमें आत्म स्मृति की स्थिति सूक्ष्म बिंदु से विराटता की दिशा में-सर्वे भवंतू सुखिनः के लिए समर्पित हो जाती है। सर्व आत्माओं के उत्कर्ष का अभिवादन करते हुए स्वयं की महानता को अर्पित कर देने की अभिव्यक्ति आत्मदर्शन के आध्यात्मिक पुरुषार्थ में-कर्मातीत अवस्था, का जीवंत प्रमाण होता है।

परमात्म दर्शन के राजयोग मौन में अव्यक्त स्वरूप

श्रेष्ठ व्यवहार का यथार्थ स्वरूप आचरण की शुचिता का वह सबल पक्ष है जिसमें परमात्मदर्शन की पवित्र स्थितियां राजयोग मौन के व्यवहारिक रूप में परिलक्षित होती हैं। आत्म जगत को अव्यक्त स्वरूप में परिवर्तित करने का पुरुषार्थ कई जन्मों से पुण्य की पूंजी के सानिध्य से भी मुक्त होकर आत्म और परमात्म दर्शन हेतु गतिशील रहता है। जीवन में पुण्य कर्म द्वारा उत्पन्न होने वाले कर्म बंधन एवं संबंध से अनासक्त रहकर आत्मिक स्वतंत्रता की सुखद अनुभूति ही नैसर्गिक राजयोग से मौन की उच्चता का परिणाम है। परमसत्ता का सूक्ष्म और एवं विराट परिदृश्य जब बिंदु एवं सिंधु स्वरूप में प्रवाहित होता है तब अव्यक्त स्वरूप का आध्यात्मिक परिवेश-वसुधैव कुटुंबकम, के रूप में चहुं और परिलक्षित हो जाता है। अव्यक्त स्वरूप का साक्षात्कार ही परमात्म दर्शन के राजयोग द्वारा गहन मौन से उत्पन्न अनुभवी दृष्टिकोण के आत्म वैभव से युक्त, प्रतिपादन में सदा ही मददगार सिद्ध होता है।

> “हमें शांति के लिए उतना ही बहादुरी से लड़ना चाहिए, जितना हम युद्ध में लड़ते हैं।”

लालबहादुर शास्त्री, पूर्व प्रधानमंत्री, भारत

> “हमारे जानी दुश्मन के नाम हैं अज्ञान उसे धर दबोचो, मजबूती से पकड़कर पीटो और उसे जीवन से भगा दो।”

सावित्री बाई फूले, समाज सुधारक

मेडिटेशन से माइंड होगा पॉवरफुल

विचार जितने सकारात्मक होगें माइंड की शक्ति उतनी ही बढ़ेगी

शिव आमंत्रण, आबू रोड। एक बार एक बच्ची हमारे पास आयी। बाहरवीं कक्षा में थी वो लड़की तो बाहरवीं की भी पढाई कर रही थी और माता-पिता ने कहा आईआईटी में भी जाना है वो भी पढ़ाई करनी है। अब हर रोज उसके पिता उसके उपर दबाव डालते कि बाहरवीं के साथ-साथ आईआईटी भी निकालना है। तो वो बहन थोड़ी हताशा में जाना शुरू हो गई फिर उसका पढ़ने का ही मन नहीं करता था क्योंकि हताशा में जाने के बाद तो बच्चा पढ़ नहीं सकता चाहे कितनी भी कोशिश करें। उनको नहीं पता कि उसको उदासी है पढ़ने को अब मन नहीं करता पढ़ने से भी अंदर कुछ जाता नहीं है।

बच्ची बारहवीं कक्षा ही नहीं पास कर पाएगी इस डर से तो आईआईटी तो बहुत दूर की बात हो गई। परन्तु बड़े सोचते हैं ये ही 6 महीनें है सिर्फ, अगर अभी दबाव नहीं डाला उसको नहीं बोला तो ये 6 महीने बीत जाएंगे फिर बाद में जा के थोड़े ही आईआईटी में दाखिला मिलेगा तो दबाव तो डालना ही पड़ेगा। डालो! यह एक पसंद है किसी के सर के उपर वजन रखकर उसको बोलो चलो। सिर्फ वजन हटाओ वो ज्यादा अच्छा चलेगा लेकिन हमने सोचा जब तक हम वजन रखेंगे नहीं वो चलेगा ही नहीं।

आज अपने ही बच्चों का सबसे ज्यादा नुकसान हम इस दबाव के कारण कर रहे हैं कि तुम पढ़ो पढ़ो पढ़ो, पढ़ोगे तो मुझे खुशी होगी, तुम्हारे अंक देखकर। आज एक बच्चा फेल होता है तो वो आत्महत्या क्यों करता है? वो इसलिए आत्महत्या नहीं करता कि वो फेल हुआ है। किसी बच्चें ने आज तक इसलिए आत्महत्या नहीं की होगी कि वो फेल हुआ है, क्योंकि बहुत सारे बच्चे हैं जिन्होंने आत्महत्या नहीं की लेकिन आत्महत्या करने का सोचा होता है और जब उनसे बात की जाती है कि ये विचार क्यों आता है फेल हुआ ना कौन-सी बड़ी बात है एक साल की तो बात है सिर्फ, उस एक साल को दोहराने की बजाए आप ऐसे संकल्प करते हो! तो कहते हैं इनका सामना कौन करेगा अभी। हमारे डर से वो अपना जीवन देते है वो अंक की वजह से जीवन नहीं देते हैं। अब उसके बाद माता-पिता

जीवन प्रबंधन

बी.के. शिवानी

जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन गुरुग्राम, हरियाणा

का जीवन कैसा होगा? लेकिन अब क्या कर सकते हैं, करना कब था पहले करना था।

थोड़े दिन पहले ग्याहरवीं कक्षा का एक बच्चा बहुत ज्यादा दबाव के कारण तनाव में आ गया था। वो उस वातावरण में वापिस अपने घर जाना नहीं चाहता था।

कृपया हमें रूककर जांच करना होगा। पढ़ना पढ़ाना ठीक है लेकिन उसके कारण इतना दबाव डाल देना कि जो पढ़ने वाली शक्ति है वो शक्ति ही खत्म हो जाए तो वो पढ़ेगा कैसे? ध्यान रख सकते हैं या नहीं रख सकते हैं? ध्यान रख सकते हैं और निश्चय ही उनके उपर हाथ नहीं उठाना, अगर अंक अच्छे नहीं आये या पढ़े नहीं, उससे तो उनकी शक्ति और भी कम हो जाएगी। हमें बच्चे को पढाना है तो उसकी शक्तियों को बढ़ाना है उसकी शक्तियों को बढ़ाने के लिए हमें अपनी शक्तियों को बढ़ाना है कि चाहे उसने कुछ भी किया है हमें प्यार से उसको समझाकर उसको सशक्त बनाना है, डंडे से काम होने वाला नहीं है। तो अंक हमें खुशी नहीं देते हैं, अंक हमें जॉब देते हैं और अंक बहुत जरूरी हैं किसके लिए नौकरी के लिए। आज किसी से भी उद्योग में पूछो कि अंक क्या काम करते हैं हमारी पहली नौकरी देते हैं ये ही होता है ना उसके बाद आपकी अंक-सूची कितनी काम की होती है। तो वो पहली नौकरी के लिए वो अंक चाहिए जिसके लिए 15 साल हम दबाव झेलते हैं लेकिन ये जो मन है जिसने हर कदम पर काम करना है उसका उपयोग कितने साल होने वाला है! पहली नौकरी के अंक के लिए हम उस मन को कमजोर करते हैं जिसका जीवन में हर पल उपयोग होने वाला है, नौकरी में भी, रिश्तों में भी। आज जीवन में छोटी-सी असफलता आती है, व्यापार में थोड़ा-सा उतार चढ़ाव आता है तो हमारी हालत क्या हो जाती है! गिर जाती है।

एक बार पति ने तीन बार आत्महत्या करने की कोशिश की। क्योंकि उनका व्यापार बहुत कोशिशों के बावजूद चल नहीं रहा था, सफल नहीं थे। अब वो 6 महीने और मेहनत करने वाले हैं अगर 6 महीने में इनका व्यापार ठीक चला तो ठीक, नहीं तो फिर ये वो ही कोशिश करेंगे। भाई राजयोगा मेडिटेशन केंद्र पर आए, मेडिटेशन सीखा अपने अंदर ताकत भरी। अभी भी परेशानी है लेकिन मैं ठीक हो गया ये महत्वपूर्ण है, बिजनेस और मैं दो अलग-अलग चीजें है, अंक और मैं दो अलग-अलग चीजें है अगर मै ठीक नहीं होउंगा तो मैं व्यापार भी कैसे करूंगा फिर मेरा प्रेरणा का स्तर ही गिर जाएगा लेकिन अपने आप को ठीक कैसे रखना है वो अंक-सूची से तो नहीं होगा ना। इन सारी परिस्थितियों से सामना करने की शक्ति स्कूल में सिखाई थी क्या? क्या ये ठीक है कि जिसके जितने ज्यादा अंक उसकी सामना करने की शक्ति ज्यादा है! ऐसा नहीं है तो फिर हमारी सारी ताकत पूरा ध्यान अंक..अंक.. क्यों है? अंक ज्यादा महत्वपूर्ण या सामना करने की शक्ति ज्यादा महत्वपूर्ण है लेकिन उस सामना करने की शक्ति को तो हर रोज अंकों के फेर में कम करते जा रहे हैं।

विशेष सेवाओं पर डॉ. दीपक का गायक शानू ने किया सम्मान

शिव आमंत्रण । राजभवन, मुंबई महाराष्ट्र के राज्यपाल महामहिम भगत सिंह कोश्यारी राजयोग के प्रसार एवं प्रचार के लिए बीके डॉ दीपक हरके को ट्रेंडसेटर 2022 पुरस्कार से सम्मानित करते हुए। साथ मैं सुप्रसिद्ध पार्श्व गायक कुमार सानू।

जालोर महोत्सव में ब्रह्माकुमारी की झांकी को मिला प्रथम पुरस्कार

शिव आमंत्रण, जालोर, राज.। पर्यटन विभाग राजस्थान, जिला प्रशासन जालोर एवम नगर पालिका मंडल भीनमाल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित जालोर महोत्सव में ब्रह्माकुमारी राजयोग केंद्र भीनमाल की झांकी को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। स्थानीय विकास भवन में भव्य कार्यक्रम में सर्टिफिकेट और ट्रॉफी बीके गीता बहन को देते हुए एसडीएम भीनमाल जवाहराराम चौधरी, डीवाईएसपी सीमा चोपड़ा, कार्यक्रम प्रभारी संदीप देवासी, नगर पालिका श्वह आशुतोष आचार्य।

माइंड पॉवर ऑफ YOUTH

युवा देश के कर्णधार होते हैं, ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़कर आज लाखों युवाओं का जीवन बदल गया है, ऐसे परिवर्तनकारी युवाओं की अनुभव गाथा...

बीके भाई का रूप धारण कर बाबा ने मदद किया

शिव आमंत्रण । बात सन 2013 की है तब मैं भारत सरकार परमाणु विभाग नाभिकीय ईंधन सम्मिश्र (एनएफसी) हैदराबाद का कर्मचारी था। एक दिन मैं अपने गांव बस द्वारा रवाना हो रहा था। स्कूल का समय होने से बच्चे बस के अंदर आ रहा था। मेरे सामने स्कूल के बच्चे पीछे उतरने वाले यात्री के बीच मैं फंस गया। बहुत तकलीफ महसूस हो रही थी। मन में अदंर ही अंदर संकल्प चल रहा था कि मेरा मीठा बाबा, मेरा प्यारा बाबा अवश्य मदद करेगा। कुछ देर बाद मैंने देखा कि फौरन एक मेरे जैसा स्वेतवस्त्र वाला मेरे सामने आ गया। मेरे को बस से उतार दिया। एक आटो रिक्सा में लगेज के साथ मुझे बिठा दिया। मैं आराम से घर पहुंच गया। ब्रह्माकुमारीज़ का मुख्य सेवाकेंद्र हमारे गांव से 30 किमी दूरी पर है। जहां गुरुवार को मुरली सुनने के बाद निमित्त बीके बहन ने हम सब को भोग स्वीकार कराया। तभी मैंने एक भाई को खुशी से आप का बहुत बहुत धन्यवाद कह दिया। मेरा वचन सुनते ही वह भाई आश्चर्य होकर मेरे तरफ देख रहा था। वह बोला मैं एक सप्ताह से घर से नहीं निकला। मैं आप को कैसा मदद किया? तब मुझे एहसास हुआ कि मेरा बाबा ही भाई जी का रूप धारण कर अपने बच्चे का मदद किया। बाबा कोटि कोटि शुक्रिया आपका।

बीके सोमय्या, सिकंदराबाद, तेलंगाना

कार्यस्थल के उन्नति का माध्यम बना परमात्म ज्ञान

शिव आमंत्रण। मैं 7 साल से एक मल्टीनेशनल कंपनी में मार्केटिंग मैनेजर के पद पर कार्यरत हूं। कुछ दिन पहले कंपनी ने मुझे एक विशेष प्रोजेक्ट सौंपा था और निर्धारित समय में पूरा करने को कहा। कंपनी कुछ वर्षो से जिस आर्थिक नुकसान का सामना कर रही थी उसे मिटाना और साथ ही कंपनी के प्रतिनिधि वर्ग को अच्छे प्रशिक्षण देना जिससे वे सही रीति से कार्य कर सकें। शुरुआत में जब कार्यभार मुझे सौंपा तब पहले दिन से ही सभी के बीच जो आपसी मतभेद था और जिसके कारण एक नकारात्मक वातावरण कार्यस्थल के अंदर बना हुआ था उसको सकारात्मक दिशा की ओर ले जाने में प्रतिबद्ध हुआ। प्रतिदिन के कार्य शुरुआत करने से पहले कुछ समय राजयोग अभ्यास और आध्यात्मिक ज्ञान की चर्चा करने लगा। मेने निजी पुरूषार्थ में प्रतिदिन अमृतबेले और नुमाशाम के योग अभ्यास के दौरान संस्था के सभी आत्माओं को शुभ भावनाएं और सहयोग की भावनाएं प्रदान की जिसका परिणाम कुछ ही दिनों में दिखने लगा सभी उच्च पदाधिकारी और कर्मचारी वर्ग आपसी मतभेद और भेदभाव को भूलकर एक दूसरे के सहयोगी बन गए सभी एक दूसरे के प्रति आशावादी दृष्टिकोण अपनाने लगे।

बीके शुभ्र, दुर्गापुर, पश्चिम बंगाल

निश्चयबुद्धि होकर उमंग को तीव्र बनाओ तो इच्छाएं पूर्ण हो जाएंगी

प्रेरणापुंज

दादी गुलजार (हृदयमोहिनी)
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

मन-बुद्धि को परमात्मा में लगाना ही साधना है

शिव आमंत्रण, आबू रोड । हम सभी जब से परमात्मा के बने हैं तब से ही साधना तो कर ही रहे हैं। क्योंकि हम सबके अनुभव में है कि एक ही बाबा हमारा सर्व सम्बन्धी है और एक ही बाबा से हमको सर्व प्राप्तियां होती हैं। तो याद अर्थात् योग व साधना क्या है? जहां जितना समीप का सम्बन्ध होता है उतना ही याद स्वतः आती है और दूसरा जहां कोई प्राप्ति होती है तो प्राप्ति के आधार पर याद सदा और सहज ही आती है यह तो सबको अनुभव है ही। तो बाबा सर्व संबंध निभाने वाला है, न सिर्फ बाबा निभाता है लेकिन बाबा कैसे निभाता है और हर संबंध से क्या-क्या अनुभव वा प्राप्ति होती है वह हम सबको अनुभव है तब तो बाबा के बनें हैं। तो साधना अर्थात् एक बाबा की याद और उस साधना में एकाग्रता हो।।

भक्ति मार्ग में भी भक्त लोग भिन्न-भिन्न रूप से साधना करते हैं। जब तक वो अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर लेते, दर्शन नहीं हो जाते तब तक एक टांग पर ही खड़े रहेंगे व हठयोग की साधना करते रहेंगे। यहाँ तो ऐसे हठयोग की, एक टांग पर खड़े होने की बात नहीं, हम तो अपने मन-बुद्धि को एक में लगाते हैं - यही हमारी साधना है। तो साधना शब्द जो बाबा ने अभी कहा है, यह है तो याद की ही बात लेकिन साधना शब्द का अर्थ है उसमें एकदम हलचल न हो, एकाग्रता हो। और जहाँ एकाग्रता होती है वहाँ आप जिस स्थिति का अनुभव करना चाहते हैं वह चाहना एकाग्रता के बल से पूर्ण हो जाती है। जैसे परमधाम में हम मन बुद्धि द्वारा एक सेकण्ड में पहुँच तो जाते हैं परन्तु उसमें सदैव एकाग्रता हो अर्थात् एकरस अवस्था हो और हमेशा उसी का अनुभव होता रहे, उसके लिए फिर-फिर घड़ी-घड़ी वही पुरुषार्थ करना ना पड़े। समझो अभी आत्मा अशरीरी बनके परमधाम में बाबा के साथ पहुँच गई, स्थिति वह हो गई और फिर कोई ना कोई व्यर्थ संकल्प या कोई भी काम का संकल्प या कोई भी बाहर की हलचल भी आकर्षण करती है, कुछ भी हुआ तो हमारी जो साधना है, एकाग्रता है वह हिल जाती है। नीचे ऊपर हो जाती है तो वह साधना नहीं है। साधना का अर्थ ही है कि बस, उस स्थिति में एकाग्र होकर टिक जाना। जितना समय चाहें उतना समय हम उस स्थिति में स्थित हो जाएँ। एक होता है पुरुषार्थ करना जैसे हमने याद किया - बाबा, मैं अशरीरी आत्मा हूँ। बाबा, जैसे आप हो वैसे मैं भी आत्मा ज्योति हूँ, मैं भी परमधाम निवासी हूँ, अपने घर में बाबा आपसे मिलने आ रही हूँ... जो भी संकल्प से पुरुषार्थ करते हैं लेकिन जब साधना की स्थिति होती है तो उसमें पुरुषार्थ खत्म हो जाता है। और उसी स्थिति में स्थित हो जाते हैं यानि टिक जाते हैं, हिलते-जुलते नहीं हैं और जितना समय हम चाहें मानो हमारी रुचि है हम आधा घण्टा बाबा की याद में ही खो जाएँ। एकदम पावरफुल साधना हो तो उतना समय हम अपने मन को एकाग्र करके उसमें टिक सकें। **क्रमशः**

ईश्वरीय ज्ञान से ही मरजीवा बनना संभव

- अंग्रेज सरकार के अधिकारियों को भी अभय होकर स्पष्ट शब्दो में यह सत्यता बताई ताकि कल को कोई यह उलहना न दे सके

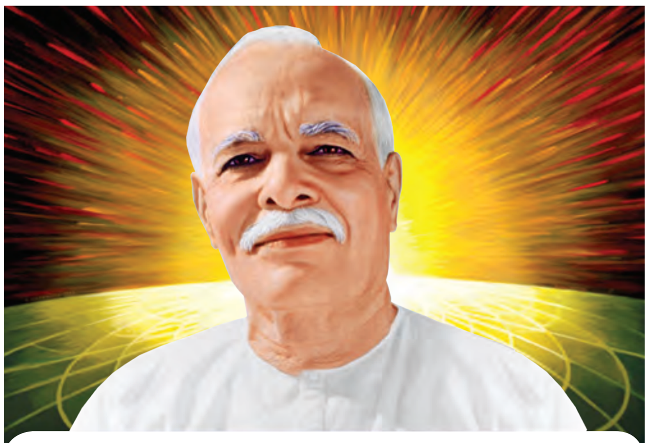

रियल लाइफ

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा
संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

- प्रभु इस सृष्टि में आये परन्तु हमें सूचना भी न मिली

शिव आमंत्रण, आबू रोड । बाबा ने न केवल भारत के राजनैतिक नेताओं तथा विशिष्ट एवं सामान्य लोगों को परमपिता परमात्मा के अवतरण तथा सतयुग की स्थापना और कलियुग के विनाश के बारे में संदेश दिया बल्कि उन्होंने अंग्रेज सरकार के अधिकारियों को भी अभय होकर स्पष्ट शब्दो में यह सत्यता बताई ताकि कल को कोई यह उलहना न दे सके कि प्रभु इस सृष्टि में आये परन्तु हमें सूचना भी न मिली और हमें उस परमपिता निमन्त्रन भी न दिया। इस कर्त्तव्य की पूर्ति के लिए बाबा ने इंग्लैण्ड की प्रिंसेस एलिजाबेथ को बकिंघम पैलेस, लंदन के पते पर भी भिजवाये। देखिये तो यज्ञ-माता द्वारा लिखवाये गये एक पत्र (यह पत्र दिनांक 16 मार्च, 1939 को 'ओम राधे' जी ने अपनी ओर से भेजा था) में निम्नांकित पंक्तियाँ कितना स्पष्ट संदेश दे रही है-

''प्रिय बहन, इस पत्र के साथ मैं आपको 'आत्मानुभूति' के विषय पर कुछ प्रवचन संलग्न करके भेज रही हूँ। हमारे यहाँ के अनेक भाइयों और बहनों ने दिव्य दृष्टि द्वारा साक्षात्कार किया है कि निकट भविष्य में सृष्टि पर महासंकट की घड़ी आने वाली है। तब आत्मिक बल वाले लोग ही उस भयावह स्थिति का सामना कर सकेंगे और बच सकेंगे। आत्मिक बल वाले लोग ही उस भयावह स्थिति का सामना कर सकेंगे और बच सकेंगे। आत्मिक-बल, विज्ञान-बल अथवा अन्य सब प्रकार के बल से उच्च है और उन पर विजय पा सकने में समर्थ है। अभी जो विश्व-युद्ध होने वाला है, उसका परिणाम उन सभी के लिए निराशजनक होगा जोकि आत्मानुभूति के लिए पुरुषार्थ नहीं करते और अपने सच्चे धर्म की रक्षा नहीं करते। आपको मालूम रहे कि पृथ्वी पर दैवी स्वराज्य की स्थापना का समय बस आने वाला है और मेरी जो 5 वर्ष की आयु वाले बच्चों से लेकर वयोवृद्ध लोगों तक की जो सेना है, वह इस कार्य के लिए तैयार हो रही है। इस अहिंसक सेना के विरुद्ध लोग बहुत शोर मचा रहे हैं।

प्यारी बहन, आप भी आत्मानुभूति तथा विश्व का दैवी स्वराज्य प्राप्त करने का पुरुषार्थ करो.....''

इस प्रकार, बाबा हरेक को आत्म साक्षात्कार करने, अपने-आपको जानने तथा पवित्र बनने के लिए जागते रहते। स्त्री जाति को तो वे विशेष प्रकार से प्रेरित करते थे क्योंकि वे कहते थे कि यदि वे स्वयं जाग कर दूसरों को जगाने का कार्य करें तो भारत का और विश्व का कल्याण हो सकता है। बाबा कहते थे कि माताओं के साथ तो बहुत अन्याय होता है परन्तु फिर भी कन्याएं-मताएं सदा त्याग के लिए तैयार रहती है। जब कन्या विवाह करके मायके से ससुराल जाती है, तब वह भी तो उसका एक प्रकार से मरकर दूसरा जन्म ही होता है। वह कन्या पिछले सम्बन्धियों को भूल अब नये सम्बंध जोड़ लेती है। और अब मात-पिता की बजाय पति तथा सास-ससुर के मत पर चलती है। ईश्वरीय ज्ञान लेने के लिए भी मनुष्य को मरजीवा बनना पड़ता है अर्थात् दैहिक सम्बन्धियों को भूल कर अब अन्य के मतों को छोड़ कर एक परमात्मा के मत पर चलना होता है। अतः कन्याओं-माताओं के लिए ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करना सहज है क्योंकि उन्हें धन और पद का नशा नहीं होता है और एक सम्बन्ध को छोड़ दूसरा तो उन्हें अपनाना ही पड़ता है। बाबा कहा करते थे कि आज माता सभी के आगे घूँघट निकालती रहती है और झुकती रहती है और उसे समाज में सन्यासियों ने तथा गृहस्थियों ने बहुत ही निम्न स्थान दे रखा है। जो माता मनुष्य के प्रथम गुरू है, उस माता का आज तिरस्कार होता है। पुरुष उसे 'बांए पाँव की एड़ी' मानते हैं और उसे अपनी सम्पत्ति का वारिस भी नहीं मानते बल्कि जब चाहें उसे मार-पीट कर घर से निकाल देते हैं तथा दूसरा विवाह कर लेते है। किन्तु नारी को देखो, वह पति के मर जाने पर कितनी रोती है। **क्रमशः....**

मैं शीतल स्वभाव और मीठे बोल उच्चारण करने वाली आत्मा हूं

- ज्ञान, योग, धारणा और सेवा तो सभी करते हैं

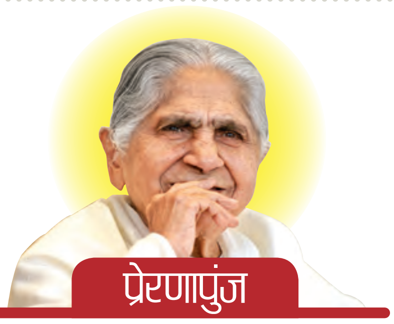

प्रेरणापुंज

दादी जानकी
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

शिव आमंत्रण, आबू रोड । यह सुख उपराम वृत्ति वाला बना देता है। यह सुख मास्टर दुःखहर्त्ता सुखकर्त्ता बना देता है। ऐसे सुख में रहने वाले सदा मस्ताने रहते हैं। जब मुरली में मस्ताना शब्द आता है तो मीठे बाबा के यह बोल हमें याद आते हैं कि बाबा ने हमें टाइटिल दिया था - मस्त फकीर। कितना मीठा टाईटल है। यह मस्ती फिक्र से फारिग कर देता है। साहिब को फकीर प्यारे लगते है और कोई बात की कमी महसूस नहीं होती है। कहने में फकीर आते है, फकीर वह जिसको न कोई सम्बन्धी अपना हो, न घर अपना हो।

व्यक्ति, वैभवों के लगाव से फ्री हो। लगावमुक्त बनने के लिए बाबा हम बच्चों को कितना मीठा इशारा देता है। लगाव मुक्त बनें तो फरिश्ता बनें तो फरिश्ता बनाना आसान है। सेवा में भी बुद्धि न जाये क्योंकि सेवा बाबा की है न कि हमारी है, जो उसमें हमारी बुद्धि जाये। सेवा भी अगर लगाव पैदा करें तो वह सेवा - सच्ची सेवा नहीं है। मेरा बाबा बहुत मीठा है, बाबा कहे कि बच्चे क्रोध से मुक्त हो जाओ, क्रोध नहीं करो। क्रोध करने वालों को प्यादे वालों की लाइन में गिना जाता है, इस इशारे को कभी भुलना नहीं चाहिए। थोड़ा भी क्रोध होगा तो घोड़ेसवार भी नहीं हो सकता है। महारथी अपने आपको समझने वाले इतना तो ध्यान रखेंगे - कि मैं शीतल स्वभाव और मीठे बोल उच्चारण करने वाली आत्मा सबके दुःख दूर करूं न कि दुःख दूं। किसी भी हालत में किसी भी बात में क्रोध तो क्या, परन्तु आवेश में भी हम न आयें। आवाज में आ करके इतना स्पष्ट बात नहीं कर सकते, जितना शान्त में रह प्रेम से बड़ी अच्छी और स्पष्ट बात कर सकते हैं। जो हमने साकार में देखा - बाबा ने कभी बच्चों पर गुस्सा नहीं किया। बड़े प्रेम से हर बात हम बच्चों को समझाते थे और अभी भी समझा ही रहे हैं। मम्मा ने भी हम सब बच्चों को इतनी अच्छी पालना प्रेम से दी है। बाबा कहते हैं- सतयुगी राजधानी या स्वर्ग स्थापन करने में हम बाबा के साथ मददगार हैं यानी स्वर्ग में आने के लायक बन रहे हैं। मददगार माना लायक बनना। जहां शेर बकरी भी इकट्ठा पानी पीते हैं, वहाँ हमारा तो आपस में कितना स्नेह होगा। थोड़ा समय सतयुग में चले आओ कितना स्नेह होगा। कई बार हमारे मन में यह ख्याल आता है - हम अगर इस बात में पास नहीं हुए तो पास विद् ऑनर में नहीं आ सकते हैं। इसलिए आपस में अति स्नेह हो। बाबा से स्नेह है वह तो हरेक का अपना-अपना पर्सनल उन्नति के लिए है। हमारे विकर्म विनाश हों। जीवन दाता हमारा बाबा है, बाबा ने इतना ज्ञान दिया है, समझ दी है, सेवा का भाग्य दिया है। इसलिए हम आप सब बाबा को याद करते हैं। परन्तु आपस में अगर अति स्नेह, ईश्वरीय स्नेह नहीं है तो विवेक कहता है हम सतयुगी आत्मा नहीं हैं। इतनी रूहानियत हमारे में शायद नहीं है जो आपस में हम ईश्वरीय स्नेह से माला के मणके बन जायें। बाबा ने कहा ब्राह्मणों की माला अब तक नहीं बनी है। आपस में इतना ईश्वरीय स्नेह नहीं है जो माला में समीप आ जायें क्योंकि समीप आने से बहुत कुछ सीखने को मिलता है। ज्ञान, योग, धारणा और सेवा वह तो हरेक करता है। लेकिन एक दो के समीप आने में कईयों को थोड़ा कठिन लगता है, आ करके फिर दूर चले जायेंगे और हमारे अन्दर सदा बाबा के, बड़ों के समीप रहने की हॉबी है। एक दो के समीप रहना माना एक दो के पीछे लटकना नहीं है। वह नुकसानकारक है, लटकेंगे तो एक के पीछे लटकेंगे या दो के पीछे लटकेंगे, वह नुकसानकारक है। लेकिन आपस में हजारों लाखों भी हो जायें तो भी एक हो करके रहें। यही ईश्वरीय स्नेह की आकर्षण बाबा का नाम बाला करेगा। **क्रमशः......**

समस्या-समाधान

ब्र.कु. सूरज भाई
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक

- शिव बाबा ने हमें सारा ज्ञान दे दिया है, अब इसे प्रैक्टिकल में लाना है

पिछले अंक से क्रमशः

योग से होगा परमात्मा के साथ का अनुभव

लौकिक में भी हर सम्बन्ध में चाहे कलियुग के अन्त में, स्वार्थ वश सभी सम्बन्ध बन्धन बन गये हैं, फिर भी उनमें अल्पकाल का सुख समाया हुआ है। परन्तु यहां तो बेहद के बाप से अर्थात् भगवान परमपिता परमात्मा से सर्व सम्बन्धों का अनुभव करना है अर्थात् अतिन्द्रिय सुख का अनुभव करना है। यह अनुभव इस दुनिया से न्यारा और सबसे प्यारा है। इसलिए इस दुनिया से अर्थात् इस देह की कर्मन्द्रियों से न्यारा होकर ही हम बेहद के बाप से बेहद का सम्बन्ध निभा, बेहद का प्यार और सुख अनुभव कर सकते हैं। आपने पूरे कल्प इस देह में रहने के कारण देह के सम्बन्धों में ही अपनी मन-बुद्धि लगाई है। अब जबकि शिवबाबा ने आकर आपको सारा ज्ञान दिया है तो अपनी मन-बुद्धि इस देह से अर्थात् देह की कर्मन्द्रियों और देह के संसार से निकालनी पड़ेगी

क्योंकि यह अल्प से भी अल्पकाल का सुख, बेहद का सुख प्राप्त करने नहीं देगा। जब तक मन-बुद्धि देह में फँसी हुई है तब तक हम सदा के लिए इस परमात्म सुख का अनुभव नहीं कर सकते। इसलिए बाबा बार-बार कहता है बच्चे न्यारे बनो क्योंकि यह कुछ ही समय का न्यारापन बाप का प्यारा बना देगा और साथ ही साथ आप अपने पूरे कल्प का ऊँचा भाग्य भी बना लेते हो।

फिर तो यह पुरानी दुनिया का त्याग नहीं बल्कि अपना ऊँचा भाग्य बनाने की युक्ति है। यदि अभी भी आपकी मन-बुद्धि इस पुरानी देह वा देह की दुनिया में थोड़ी-सी भी फंसी रही, तो आप परमात्म प्यार का सम्पूर्ण अनुभव नहीं कर पाओगे। फिर बताओ, बाप को पहचाना, ज्ञान को अच्छी तरह समझा और यथा शक्ति धारणा भी की और खूब सेवा भी परन्तु परमात्म प्यार को अनुभव नहीं किया, तो क्या किया? इसलिए परमात्मा की याद के साथ-साथ बाबा से मीठी-मीठी रूह-रिहान करो। इस देह की दुनिया से अलग हो अपने ऑरिजिनल स्वरूप अर्थात् अपने गुणों और शक्तियों से भरपूर स्वरूप को अनुभव कर बाप से मिलन मनाओ अर्थात् शिव बाप से सर्व सम्बन्ध निभाओ। जब सम्बन्धों का थोड़ा भी अनुभव होना शुरू होगा तो जल्दी ही बाप-समान बन जाओगे। इसलिए हर पल बाप को संग रखो, उनसे प्रेम भरी मीठी-मीठी रूह-रिहान करो अर्थात् परमात्मा के साथ का अनुभव करो। परमात्मा के साथ का अनुभव बहुत मीठा और बहुत प्यारा है। बस इसके लिए इस देह में रहते हुए भी इससे अपनी मन-बुद्धि निकालते जाओ क्योंकि इस दुनिया में किसी भी तरह की कोई प्राप्ति नहीं रही। इस दुनिया से सम्बन्धित हर प्राप्ति के पीछे दुःख समाया हुआ है। यह दुःख बढ़े, इससे पहले इससे निकल परमात्म प्यार में समा जाओ।

यह समय कल्प में केवल एक ही बार मिलता है, जिसमें प्राप्तियां अपरमअपार है। बस बच्चे, अब अपने संकल्पों और समय को सफल करो। देखो, रात से दिन होने में केवल एक सेकण्ड ही लगता है, उस सेकण्ड की वैल्यू को समझो। यह ना हो आप समय का इंतज़ार करो और वह सेकण्ड रात का अन्तिम सेकण्ड हो।

लौकिक में भी हर सम्बन्ध में चाहे कलियुग के अन्त में, स्वार्थ वश सभी सम्बन्ध बन्धन बन गये हैं, फिर भी उनमें अल्पकाल का सुख समाया हुआ है। परन्तु यहाँ तो बेहद के बाप से अर्थात् भगवान परमपिता परमात्मा से सर्व सम्बन्धों का अनुभव करना है अर्थात् अतिन्द्रिय सुख का अनुभव करना है।यह अनुभव इस दुनिया से न्यारा और सबसे प्यारा है। इसलिए इस दुनिया से अर्थात् इस देह की कर्मन्द्रियों से न्यारा होकर ही हम बेहद के बाप से बेहद का सम्बन्ध निभा, बेहद का प्यार और सुख अनुभव कर सकते हैं। आपने पूरे कल्प इस देह में रहने के कारण देह के सम्बन्धों में ही अपनी मन-बुद्धि लगाई है। अब जबकि शिवबाबा ने आकर आपको सारा ज्ञान दिया है तो अपनी मन-बुद्धि इस देह से अर्थात् देह की कर्मन्द्रियों और देह के संसार से निकालनी पड़ेगी क्योंकि यह अल्प से भी अल्पकाल का सुख, बेहद का सुख प्राप्त करने नहीं देगा। **क्रमशः**

परमात्मा की याद से कर्मभोग हल्का हो जाता है

स्व-प्रबंधन

बीके ऊषा
स्व-प्रबंधन विशेषज्ञ, माउंट आबू

- व्यक्ति के अच्छे कर्म का फल भी जमा होता जाता है जो उसे सुख के रूप में जीवन में मिलता है

जैसे भगवान को याद करने का फायदा यही है कि जब दुःख भोगने का समय आता है तो उस भोगना को पार करने की या उसे सहने की शक्ति मिल जाती है। हरेक व्यक्ति इतना तो ज़रूर जानता है कि उसने जीवन पर्यन्त इतने पुण्य कर्म या श्रेष्ठ कर्म नहीं किये हैं, तो चित्रगुप्त उसका हिसाब सामने लाएगा तो वह नज़ारा अच्छा नहीं लगेगा। इसलिए उस समय ईश्वर की याद की शक्ति से उस होनी की तीव्रता की महसूसता कम हो जाती है। वह सहनशक्ति, हमारी भोगना की तीव्रता को बहुत कम कर देती है। निमित्त मात्र उस कर्म की भोगना कोई बीमारी या किसी परिस्थिति के रूप में आती है लेकिन उसको पार करना आसान हो जाता है। बाकी ऐसा नहीं है कि कोई यमराज हमें ले जा कर गरम- गरम कड़ाही में डालेंगे। मनुष्यों को जो कर्म की सज़ा भोगनी है वह इसी दुनिया में रहकर ही भोगनी है। जैसे मान लो कि किसी के जीवन में कोई अनहोनी निश्चित है, तो वह अनहोनी तो आती है लेकिन जब हम अच्छे कर्म करते हैं, ईश्वर के याद की शक्ति अपने में भरने लगे, तो वह अनहोनी जो आनी है वह आती ही है, लेकिन महसूस ऐसे होगा, जैसे मक्खन से बाल निकल गया, इस तरह हम उस घटना से पार हो जायेंगे। उसकी भोगना हमें कड़े रूप में अनुभव नहीं होती। दूसरा ईश्वर को क्षमा का सागर, दया का सागर कहा जाता है, उसकी क्षमा का स्वरूप है कि वह मनुष्यों को कोई न कोई विशेषता का वरदान देता है जिससे मनुष्य श्रेष्ठ कर्म कर सके और अपना जीवन अच्छी तरह से व्यतीत कर पाएं। कोई व्यक्ति कितना भी बुरा क्यों न हो, लेकिन अपनी विशेषता के वरदानों के प्रयोग से वह जीवन में खुशी का अनुभव करने लगता हैं, जिससे भोगना का कष्ट कम महसूस होता है। हमें तो सिर्फ इस विशेषता के वरदान को पहचान कर उसका उपयोग अच्छे कर्म करने के लिए करना है। ताकि इतना पुण्य अर्जित कर लें जो आगे के जन्मों को संवार दे और भविष्य प्रारब्ध को भी अच्छे से अच्छा बना सके। पुरुषार्थ बड़ा या प्रालब्ध? कर्म बड़ा या भाग्य? इस बात को एक दृष्टांत से समझते हैं:- ''एक राजा किसी जंगल से गुजर रहा था, अचानक उन्होंने कुछ आवाजें सुनीं। कुछ लोगों के बीच में जैसे कोई बड़ी बहस छिड़ी हुई थी। राजा ने देखा कि वे तीन लोग थे जिनके बीच बहस चल रही थी। तीनों अपने आपको एक दूसरे से बड़ा सिद्ध करने का प्रय| कर रहे थे। जैसे ही उन्होंने राजा को देखा तो कहा, 'महाराज, आप फैसला करके बताओं कि हम तीनों में बड़ा कौन है? राजा ने कहा, 'पहले आप अपना परिचय तो बताओ? आप कौन हो?' पहलेने कहा- मैं कर्म हूँ। दूसरे ने कहा, मैं भाग्य हूँ। और तीसरी एक महिला ने कहा- मैं बुद्धि हूँ। तीनों ने कहा, 'अब आप ही हमारे लिए यह फैसला करो कि हम तीनों में श्रेष्ठ कौन है? किसकी शक्ति और महत्व अधिक है?' राजा ने कहा, 'इसके लिए तो आपको स्वयं को प्रमाणित करना होगा उसके बाद मैं फैसला करूँगा।' उतने में वहाँ से एक लकड़हारा जंगल में लकड़ियाँ काटने जा रहा था। राजा ने कहा, 'इस लकड़हारे पर आप स्वयं को प्रमाणित करो। मैं आप तीनों को एक-एक सप्ताह की मोहलत देता हूँ। आपको स्वयं की श्रेष्ठता और बड़प्पन को सिद्ध करके बताना है। राजा ने सबसे पहले कर्म से कहा कि 'तुम अपना प्रत्यक्ष प्रमाण दिखाओ।' कर्म ने लकड़हारे में प्रवेश कर लिया। उसके अन्दर ऐसी कर्म करने की शक्ति आ गई कि उसने उस दिन इतनी सारी लकड़ी काट ली जो रोज़ के हिसाब से तीन गुना अधिक थी।

क्रमशः ...

साइलेंस की अनुभूति से जीवन में आएगी शांति

आध्यात्म की उड़ान

डॉ. सचिन
मेडिटेशन एक्सपर्ट

- अंतर्मन ▶ शांति ही शांति का पाठ। दो घड़ी के लिए तो अनुभव करेंगे ना।
- परेशान आत्माओं को अगर ज़रा भी अंचली मिल जाती तो वही उन्हें के लिए जीवन का वरदान हो जाता।

सर्व आत्माओं की आश पूर्ण होने का समय आ गया है। समय सबकी बुद्धि को प्रेरित कर रहा है। गुप्त कार्य जो चल रहा है वह कार्य सभी को अपनी तरफ़ खींच रहा है लेकिन वह जान नहीं सकते कि यह संकल्प क्यों आ रहा है! बनाया भी खुद और फिर यूज न करें यह संकल्प क्यों चल रहा है! तो स्थापना का कार्य प्रेरित कर रहा है लेकिन वह जानते नहीं। यह आप स्वयं समझते हो कि परिवर्तन में विनाश के सिवाय स्थापना होगी नहीं। लेकिन भावना तो उन्हों की भी वही है ना! उन्हों की भावना को लेकर यह खुशखबरी उन्हों को सुनाओ तो विधि यही सुनायेंगे कि -'शांति के सागर द्वारा ही शांति होगी'। हम सब एक हैं। यह ब्रदरहुड की भावना किस आधार से बन सकती? जिससे यह संकल्प ही ना उठे, मेहनत नहीं करनी पड़े। कभी हथियार यूज़ करें, कभी नहीं करें। लेकिन यह संकल्प ही समाप्त हो जाए, ब्रदरहुड हो जाए, यह है विधि। ब्रदरहुड आ गया तो बाप तो है ही। है। ऐसे खुशख़बरी के रूप से उन्हों को सुनाओ। शांति का पाठ पढ़ना पड़ेगा। शांति की विधि से अशांति खत्म होगी। लेकिन वह शांति आवे कैसे? उसके लिए फिर मंत्र देना पड़े। शांति का पाठ पढ़ाते हो ना! मैं भी शान्त, घर भी शान्त, बाप भी शान्ति का सागर, धर्म भी शान्त। तो ऐसा पाठ पढ़ाओ। शांति ही शांति का पाठ। दो घड़ी के लिए तो अनुभव करेंगे ना। एक घड़ी भी डेड साइलेन्स का अनुभूति हो जाए तो वह बार-बार आपको थैंक्स देंगे। आपको ही भगवान समझने लग जयेंगे। क्योंकि बहुत परेशान हैं ना। जितनी ज्यादा बड़ी बुद्धि है उतनी बड़ी परेशानी भी है, ऐसी परेशान आत्माओं को अगर जरा भी अंचली मिल जाती तो वही उन्हों के लिए जीवन का वरदान हो जाता। जिसको भी चान्स मिले वह बोलते-बोलते शांति में लें जाएँ। एक सेकंड भी अनुभूति में उन्हों को ले जाएँ तो वह बहुत-बहुत थैंक्स मानेंगे। वातावरण ऐसा बना दो जो सभी ऐसे अनुभव करें जैसे कोई शांति की किरण आ गई है। चाहे एक, आधा सेकण्ड ही अनुभव हो क्योंकि यह तो वायुमण्डल द्वारा होगा ना! ज्यादा समय नहीं रह सकेंगे। एक आधा सेकेंड भी वायुमंडल ऐसा हल्का बन जाए तो अंदर से बहुत शुक्रिया मानेंगे। क्योंकि विचारे बहुत हलचल में हैं। उन्हों को देख बापदादा को तो रहम आता है। ना रात की नींद, न दिन की, भोजन भी खाने की रीती से नहीं खाते। जैसे कि ऊपर में बोझ पड़ा हुआ है। क्या होगा, कैसे होगा! तो ऐसी आत्माओं को एक झलक भी मिल जाए तो क्या मानेंगे! उन्हों के लिए तो समझो सूर्य नीचे उतर आया। एक झलक ही चाहिए। ज्यादा समय तो वह शक्ति को धारण भी नहीं कर सकेंगे। यह तो थोड़ी घड़ी की बात है। जैसे लहर आती और चली जाती है। इतना भी अनुभव हुआ तो उन्हों के लिए तो बहुत है क्योंकि बहुत परेशान हैं। उन्हों को थोड़ा तिनके का सहारा भी बहुत है। सन 2002 जुलाई आबू में अत्यधिक वर्षा एवं कोहरा होने कारण गुलज़ार दादीजी शांतिवन के 'शक्ति भवन' में निवास करती थीं। दादीजी की स्मृती आयी तो कई भाई पहुँच गए दादीजी के पास। उन्हें ज्ञान सरोवर का समाचार सुनाया। दादीजी ने सबको बहुत प्रेरणा देने वाली बातें सुनायी 'बाबा ने हमें जो भी सेवा दी है, हम उसी योग्य हैं तभी तो दी है। जो सेवा मिली है हमें उसका उत्कृष्ट प्रदर्शन करना चाहिए, चाहे कोई हमें देखें ना देखें, कोई प्रशंसा करें ना करें, मात्र इस भाव से कार्य करना चाहिए कि बाबा मुझे स्वयं देख रहे हैं। आप स्वयं अनुभव करोगे कि बाबा आपकी हजारों भुजाओं से सहायता कर रहे हैं।

तत्पश्चात् हमें भोजन परोसने की सेवा पर गर्व का अनुभव होने लगा। सभी दादीजी से विदा ले ही रहे थे कि दादीजी ने कहा, ठहरो अभी आती हूँ। कुछ समय के पश्चात् दादीजी लौटकर आयीं उनके हाथ में दो छोटी थाली थी जिसमें नमकीन व मीठाई थी।सबके मुख से एक साथ आवाज़ निकली....दादीजी..यह क्या...? दादीजी ने कहा... मैं ज्ञान सरोवर आती हूँ तो आप लोग हमारी बहुत सेवा करते हो....आज मैं भी करुंगी। दादीजी की स्नेहपूर्ण बातें सुनकर सब धन्य हो गए।

> "एक आधा सेकेंड भी वायुमंडल ऐसा हल्का बन जाए तो अंदर से बहुत शुक्रिया मानेंगे। क्योंकि विचारे बहुत हलचल में हैं।"

"महानता लाने के लिए ज्ञान की महीनता में जाना है।"

व्यापार प्रभाग के अभियान की राष्ट्रीय लांचिंग

ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शान्ति रिट्रीट सेन्टर में कार्यक्रम दौरान मुख्य अतिथि एवं अन्य।

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत गुरुग्राम स्थित ओम शांति रिट्रीट सेन्टर (ओआरसी) में वित्तीय मामलों से जुड़े सीए, सीएस एवं सीएमए प्रोफेशनल्स के लिए 'रिकनेक्ट, रिचार्ज एंड रिजूवनेटिंग' कार्यक्रम की राष्ट्रीय लॉन्चिंग की गई। इसमें ओआरसी की निदेशिका बीके आशा दीदी ने कहा कि ये हम सभी का सौभाग्य है, जो इस वर्ष आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था भी आध्यात्मिक मूल्यों के आधार पर पिछले 85 वर्षों से स्वर्णिम भारत बनाने की सेवा कर रही है। हम सभी ये दृढ़ संकल्प करें कि अपने श्रेष्ठ आचरण और निष्ठा के बल पर स्वर्णिम भारत का निर्माण करेंगे। भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड की सदस्या डॉ. मुकुलिता विजयवर्गीय ने कहा कि देश में दिवालिया संबंधित मामले लगातार बढ़ रहे हैं और इससे जहां व्यक्ति मानसिक रूप से कमजोर होता है, बिजनेस भी अस्त-व्यस्त हो जाता है। इसलिए हमें मेडिटेशन से मन को मजबूत बनाना जरूरी है साथ ही नियमों का पालन भी आवश्यक है। उन्होंने कहा कि हमें कोऑपरेशन, कंट्रीब्यूशन और कोलोब्रेशन की आवश्यकता है। ऑनलाइन संबोधित करते हुए भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेंट संस्थान के अध्यक्ष सीए डॉ. देवाशीष मित्रा ने कहा कि सीए संस्थान का मोटो है 'या एष सुप्तेषु जाग्रति' अर्थात कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। जो व्यक्ति सोते हुए भी जागता रहता है, वह एक सीए होता है। हम सब सीए मिलकर स्वर्णिम भारत के निर्माण में भरपूर सहयोग देंगे। भारतीय लागत लेखाकार संस्थान के अध्यक्ष पी राजू अय्यर ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान के स्ट्रेस फ्री मैनेजमेंट कार्यक्रम बहुत ही प्रभावी होते हैं। सीएमए उपाध्यक्ष विजेंद्र शर्मा, सीएमए शैलेन्द्र पालीवाल, भारतीय प्रबन्धन विशेषज्ञ प्रो. राजन सक्सेना, सी.ए राज चावला ने भी अपने विचार व्यक्त किए। अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन ने भी संबोधित किया।

मीडिया कलम की ताकत से सकारात्मकता को हर जगह फैला सकती है: बीके शैलजा

शिव आमंत्रण, चंदला, मप्र। तहसील चंदला में आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्ण भारत की ओर कार्यक्रम के तहत मीडिया सेमीनार का आयोजन किया गया। छतरपुर सेवा केंद्र प्रभारी शैलजा उपस्थित रहीं, उन्होंने मीडिया कर्मियों सकारात्मक दृष्टिकोण का महत्व बताते हुए कहा कि मीडिया एक ऐसी ताकत है ऐसी शक्ति है जो अपनी कलम से सकारात्मकता को हर जगह फैला सकती हैं। उन्होंने कहा कि भले हमें खबर हर प्रकार की दिखानी पड़ती है फिर भी सभी मीडिया वालों को लक्ष्य रखना है कि कम से कम एक कॉलम ऐसा हो जिसमें हम सकारात्मक बातें लिख सकें। प्रोग्राम में सभी मीडिया कर्मियों ने मातृभूमि को पत्र लिखा अपने अपने मन की भावनाएं लिखीं। सेमीनार में चंदला के सभी मीडियाकर्मी मौजूद रहे।

स्वर्णिम भारत अभियान: महाशिवरात्रि महोत्सव मनाया

शिव आमंत्रण, समस्तीपुर (बिहार)। समस्तीपुर जिले के मोहिउद्दीन नगर में नये सेवाकेंद्र के उद्घाटन समारोह में दीप प्रज्वलन के पश्चात परमात्म-स्मृति में खड़े हैं बीके सविता, माधुरी श्रीवास्तव, प्रमुख व्यवसायी शंकर प्रसाद लोहिया, बीके कृष्ण, बिहार राज्य उत्पादकता परिषद् के अध्यक्ष डीके श्रीवास्तव, प्रमुख व्यवसायी सतीश चांदना, महंत शंकरदास एवं स्थानीय विधायक राजेश कुमार सिंह के प्रतिनिधि।

मीडिया सेमीनार: सकारात्मकता के साथ पत्रकारिता करें

शिव आमंत्रण, बरेली (मप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र द्वारा मीडिया प्रभाग द्वारा समाधान परक पत्रकारिता से समृद्ध भारत की ओर विषय पर सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें भोपाल से पधारी बीके डॉ. रीना और बीके रावेंद्र ने संबोधित किया। बीके शिवराम ने स्वागत किया। इसमें वरिष्ठ पत्रकार सुरेश कुमार बिंदुआ, संजय शर्मा और भगवान दास राठी ने अपने विचार व्यक्त किए। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके जयंती ने आभार माना।

किसान सशक्तिकरण सम्मेलन आयोजित

काशगंज उप्र.। रामनगरिया में ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र कलान (शाहजहांपुर) द्वारा महिला सशक्तिकरण, संत सम्मेलन एवं किसान सशक्तिकरण का आयोजन किया गया। जिसमें हजारों लोगों ने भाग लिया। बीके सरोज, क्षेत्रीय संचालिका बीके करुणा, संचालिका बीके रीना, ब्लॉक प्रमुख कलान रामगोपाल वर्मा ने दीप जलाकर शुभारम्भ किया।

परमात्मा को पत्र लिखकर बुराई छोड़ी

शिव आमंत्रण, अजमेर (राजस्थान)। ब्रह्माकुमारीज़ के भाटा सेवाकेंद्र स्थित भरत वाटिका के पीछे महाशिवरात्रि महोत्सव मनाया गया। इसमें नगर निगम की महापौर ब्रजलता हाडा ने एवं राजयोगिनी शांता, बीके योगिनी, पार्षद कुसुम लता सेवा केंद्र की संचालिका बीके कल्पना ने शिव ध्वज फहराया। कार्यक्रम के यज्ञ भी रचा गया जिसमें सभी ने चिट्ठी पर अपनी बुराई को लिख कर स्वाहा किया। अजमेर सबजोन इंचार्ज राजयोगिनी शांता ने कहा कि जो हमारे व्यर्थ संकल्प है वही अक के फूल है वही शिव को अर्पण कर दे और मैं मैं की बलि चढ़ा दे तो जीवन सुखी हो सकता है। नगर निगम की महापौर ब्रजलता हाडा ने कहा की यह ब्रह्माकुमारी बहनों का प्यार है जो मुझे यहां पर खींच लाता है यहां पर जो राजयोग से सिखाया जाता है।

प्रदर्शनी से समझाया ईश्वरीय संदेश

शिव आमंत्रण, वाराणसी (यूपी)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा ईश्वरीय संदेश मूल्य आधारित आध्यात्मिक ज्ञान प्रदर्शनी एडीएम विजय सिंह, कमलेश तिवारी, रमेश सिंह को समझाते हुए वाराणसी सेंटर इंचार्ज बीके सरोज।

आगमन | प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भाई पंकज मोदी का ब्रह्माकुमारीज़ सारनाथ में हुआ आगमन

आध्यात्मिकता ही श्रेष्ठ समाज की नींव: मोदी

शिव आमंत्रण, सारनाथ, वाराणसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के छोटे भाई पंकज मोदी वाराणसी की प्रसिद्ध पर्यटक स्थली सारनाथ पहुंचे। इस दौरान वह सारनाथ स्थित ब्रह्माकुमारीज संस्था के पूर्वी उत्तर प्रदेश मुख्यालय-ग्लोबल लाईट हाउस पहुंचे। यहां निदेशिका राजयोगिनी बीके सुरेंद्र एवं प्रबंधक बीके दीपेंद्र से मुखातिब हुए। इस दौरान बीके सुरेंद्र दीदी ने कहा कि देश और विश्व के उत्थान के लिए आध्यात्मिकता को साथ लेकर आगे बढ़ना समय की मांग। पंकज मोदी ने कहा कि मानवीय मूल्य और आध्यात्मिकता ही श्रेष्ठ समाज की नींव हैं। स्वयं को एक आम नागरिक बताते हुए उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता और ब्रह्माकुमारीज संस्था के साथ मेरा गहरा लगाव है। इसी आध्यात्मिक भाव और स्नेह के साथ मैं आध्यात्मिक परिवार में दीदी से आशीर्वाद लेने आया हूं। संस्था के क्षेत्रीय प्रबंधक राजयोगी बीके दीपेंद्र ने पंकज मोदी का स्वागत करते हुए कहा की शान्ति और सद्भाव की गंगा से हम पुरे विश्व को आपसी एकता के सूत्र में बांध सकते हैं। मोटीवेशनल ट्रेनर बीके तापोशी ने जीवनमूल्य आध्यात्मिक कला मंदिर का अवलोकन कराया। बीके मोहन, बीके राधिका, बीके सोनी, बीके प्रभा, बीके मनीषा, बीके प्रीति ने अतिथियों का स्वागत किया। संस्था के पूर्वांचल मीडिया प्रभारी बीके विपिन ने भी अतिथियों का स्वागत किया। इस मौके पर टीएस के उपाधीछक बिपिन राय, भारतीय सामाजिक अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली के सामाजिक वैज्ञानिक डॉ. आलोक कुमार, सूरत के प्रसिद्ध व्यापारी माणिक जैन, प्रो. धनंजय शर्मा, विधी संकाय महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के साथ भाई राजकुमार, राजू, गंगाधर, अजीत, अशोक के साथ रमेश सिंह, भिमसेन सिंह, किशोरीलाल, जयप्रकाश, मुन्नालाल, दीपक ईशान, वीरेंद्र आदि मौजूद रहे।

40 फीट ऊंचा शिवलिंग बनाया

रायपुर छग। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा विधानसभा मार्ग स्थित शान्ति सरोवर परिसर में महाशिवरात्रि महोत्सव आयोजित किया गया महोत्सव का प्रमुख आकर्षण द्वादश ज्योतिर्लिंग के साथ-साथ होलोग्राम शो के साथ प्रवेश निःशुल्क था। महोत्सव का शुभारम्भ विधानसभा अध्यक्ष डॉ. चरणदास महन्त और विधायक कुलदीप जुनेजा ने किया। इस अवसर पर शान्ति सरोवर में 40 फीट ऊंचा आकर्षक शिवलिंग बनाया गया, जिसे विशेष रूप से दिल्ली से तैयार कर मंगाया गया। इसके अलावा द्वादश ज्योतिर्लिंग की झांकी भी सजायी गई। इसका आम लोगों के अवलोकन करने का समय प्रतिदिन शाम 6 से रात्रि 10 बजे तक रखा गया।

ब्रह्माकुमारीज़ समाज में अच्छे विचारों को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहीः राज्यपाल

- आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान का राज्यपाल ने किया शुभारंभ
- पार्क के उद्घाटन पर राज्यपाल ने सेब का लगाया पौधा

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए राज्यपाल आर्लेकर और बीके सुनीता एवं अन्य।

शिव आमंत्रण, शिमला (हिमाचल प्रदेश)। ब्रह्माकुमारीज़ के शिमला पंथाघाटी सेवाकेंद्र में आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान का शुभारम्भ राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने किया। साथ ही शिवरात्रि महोत्सव के उपलक्ष्य में शिव ध्वजारोहण किया गया।

राज्यपाल ने सेवाकेंद्र परिसर में बनाए जाने वाले पार्क का उद्घाटन कर सेब का पौधा रोपण किया। बीके रजनी और सुनीता ने राज्यपाल का स्वागत व सम्मान किया।

कार्यक्रम में राज्यपाल आर्लेकर ने कहा कि मेरा सौभाग्य है कि आज मैं यहां इस पर्व को मनाने आया हूं। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के कार्यों की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान द्वारा किएं गए कार्य अनुकरणीय हैं। महाशिवरात्रि का हमारे सांस्कृतिक जीवन में एक विशेष स्थान है। ब्रह्माकुमारीज संगठन समाज में अच्छे विचारों और संस्कृति को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

पूर्व विधायक राजयोगी हृदय राम ने संस्था की विभिन्न गतिविधियों से अवगत करवाया। बीके सुनीता ने महाशिवरात्रि पावन पर्व का रहस्य बताया। बीके सुनीता ने सभी आए हुए मेहमानों का धन्यवाद किया। ब्रह्माकुमारी रजनी और सुनीता ने मुख्य अतिथि राज्यपाल को ईश्वरीय प्रसाद और सौगात प्रदान कर सम्मान किया गया।

नारी परिवार के साथ समाज की भी धुरी हैः बीके शैलजा

शिव आमंत्रण, छतरपुर मप्र। सेवाकेंद्र के (लवकुश नगर) में महिलाएं नए भारत के ध्वजवाहक विषय पर हुआ कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें छतरपुर सेवाकेंद्र प्रभारी शैलजा ने कहा कि नारी के उत्थान में ही विश्व का उत्थान है क्योंकि नारी परिवार की धुरी है तो समाज की धुरी है तो विश्व की धुरी है। वह सब की भावनाओं को समझती है भले ही वह अनपढ़ ही क्यों ना हो जब वह एक परिवार से निकल कर दूसरे परिवार में जाती तो उस परिवार के सभी सदस्यों को अपना लेती है जिस देश की नारियां चरित्रवान एवं गुणवान होंगी वह देश निरंतर उन्नति के पथ पर अग्रसर होता रहेगा। इस मौके पर भाजपा जिला महामंत्री सीता तिवारी, महिला मोर्चा मंडलअध्यक्ष दीपा बरानिया। शिव जी की महाआरती के बाद ध्वजारोहण दीप प्रज्वलन किया गया।

चंडीगढ़ में 500 भाई-बहनों ने श्वेत वस्त्रों में निकाली शांति यात्रा

शिव आमंत्रण, चंढीगढ़। स्वच्छ भारत अभियान के तहत ब्रह्माकुमारीज़ और नगर निगम की ओर से जागरूकता रैली निकाली गई। इसमें सफाई और स्वच्छता बनाए रखने का संदेश दिया गया। 500 बीके भाई बहनों ने श्वेत वस्त्रों में शांति यात्रा निकाली। यात्रा करीब 90 मिनट में संपन्न हुई जिसकी शोभा देखते ही बनते थी। महापौर सरबजीत कौर मुख्य अतिथि थीं। नगर निगम कमिशनर अनिंदिता मित्रा, चीफ इंजीनियर नरिंदर शर्मा, सेक्टर 17 के कॉउन्सलर सौरभ जोशी व मार्किट वेलफेयर एसोसिएशन के मेंबर्स उपस्थित थे। ब्रह्माकुमारीज संस्था की ओर से बीके उत्तरा, बीके अनीता और बीके कविता ने अपने विचार व्यक्त किए और आध्यात्म का संदेश दिया। शांति यात्रा के बाद बीके अनीता ने सभी को राजयोग की अनुभूति कराई।

शुभारंभ | पांडव भवन, करोल बाग नई दिल्ली में खेल प्रभाग की ओर से खेलेगा इंडिया तो जीतेगा इंडिया कार्यक्रम आयोजित

मन का मलिक बन उसे अधिकार से चलाएं

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए अतिथिगण।

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली। आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर कैंपेन के अंतर्गत पांडव भवन करोल बाग, नई दिल्ली में स्पोर्ट्स विंग के द्वारा सभी स्पोर्ट्स पर्सन्स के लिए सशक्त मन से खेलेगा इंडिया तो जीतेगा इंडिया' प्रोग्राम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में करोल बाग नई दिल्ली की डायरेक्टर राजयोगिनी पुष्पा, स्पोर्ट्स विंग मेंबर बीके विजय, किशनगंज रेलवे रेसलिंग एकेडमी के मैनेजर ध्यानचंद अवार्डी राजकुमार, पैरा स्पोर्ट्स के जॉइंट सेक्रेटरी बीके ज्योति, रॉक बाल गेम की वाइस प्रेसिडेंट सुनीता खुराना मंच पर उपस्थित रहे।

ऑनलाइन अजय कुमार बेहल सीनियर डायरेक्टर स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम ने भी अपनी शुभकामनाएं दी। बीके पुष्पा ने कहा कि सशक्त मन से खेलेंगे तो जरूर जीतेंगे। यह मन हमारे शरीर का अंग नहीं बल्कि सूक्ष्म आत्मिक एनर्जी का हिस्सा है। जैसा हम सोचते हैं वैसा ही प्रभाव हमारी सभी बातों पर पड़ता है। मन मेरा है यह जानें और मन के मालिक बनकर अधिकार पूर्वक चलाएं। मन से रेस करें रीस नहीं, यह स्लोगन सदैव याद रखें। डॉक्टर विनीत मेहता डायरेक्टर ऑफ फिजिकल एजुकेशन श्री राम कॉलेज ऑफ स्पोर्ट्स, सोहनलाल अटल एन आई एस कोच ऑफ मार्शल आर्ट्स, निर्भय कुमार एथलेटिक कोच इंडियन नेवी स्पोर्ट्स कंट्रोल बोर्ड, अजय कुमार इंडियन नेवी हॉकी टीम कोच ने भी भाग लिया।

राजकुमार ने सशक्त मन के लिए मेडिटेशन को महत्वपूर्ण बताया। बीके ज्योति ने स्पोर्ट्स विंग एवं उसकी गतिविधियों के बारे में बताया। बीके विजय ने ने कमेंट्री द्वारा प्रैक्टिकल अभ्यास भी कराया। संचालन बीके सोनिया ने किया। बीके सीमा ने गीत प्रस्तुत किया।

नई राहें

बीके पुष्पेन्द्र
संयुक्त संपादक, शिव आमंत्रण

स्वर्णिम संस्कृति के उद्भव का अमृत काल

हम सभी प्रायः स्वर्णिम संस्कृति के बारे में कल्पना करते हैं, उसमें जीना चाहते हैं और उस संस्कृति को अपनी यादों में चिरस्मृति के रूप में संजो कर रखना चाहते हैं। स्वर्णिम दुनिया के संकल्प मात्र से मन में एक खुशी-आनंद की सिहरन दौड़ जाती है और अंतःकरण से निकलता है काश! उस दुनिया का हिस्सा मैं भी बन पाता। सवाल ये है कि उस दुनिया को इस धरा पर साकार करने में हमने क्या कदम बढ़ाए हैं? हमने जीवन में कितने महान कार्य किए हैं? समाज के लिए क्या दिया है? अपनी चिंतन की धारा से धरती पर कितने शुभ और श्रेष्ठ संकल्पों का सिंचन किया है? हमारे कर्मों से कितने लोगों ने जीवन को महान और दिव्य बनाने की प्रेरणा ली है? कितना परमात्म आज्ञा को शिरोधार्य किया है? ज्ञान को कितना कर्मों की चक्की में पीसा है? क्या हम स्वर्णिम दुनिया का स्वप्न देखने के साथ उसे लाने के लिए भी गंभीर हैं? आज ये प्रश्न हमें अपने अंतःकरण से पूछने की जरूरत है।

हम खुद नहीं दूसरों को बदलना चाहते हैं-

मानव स्वभाव है कि उसे खुद की कमी-कमजोरियां नहीं दिखती हैं। जहां रिश्तों या कार्यक्षेत्र पर सामंजस्य नहीं बैठता है तो सामने वाले पर दोष मढ़ देते हैं। आध्यात्मिक ज्ञान यही सिखलाता है कि आपके जीवन की प्रत्येक घटना और परिस्थिति के लिए सिर्फ आप ही जिम्मेदार हैं। आप ही उसे बदल सकते हैं। जब हम बदलेंगे तो जग बदलेगा। जब श्रेष्ठ दुनिया, स्वर्णिम दुनिया का स्वप्न देखना सुखद लगता है तो कर्म रूपी यज्ञ में अपनी आहुति देना होगी। उस दुनिया को इस धरा पर साकार करने में साथ देना होगा।

स्वर्णिम दुनिया की संधि बेला अब-

वर्तमान का सारा काल ही अमृत काल, अमृत वेला है। ये वेला है पुरानी दुनिया से नई दुनिया की ओर बढ़ने की। साइंस के गुमान में इंसान दुनिया की अनोखी और अविस्मणीय घटना को समझ नहीं पा रहा है। दिव्य नेत्रों से दुनिया के आदि-मध्य और अंत पर नजर दौड़ाएं तो तस्वीर साफ नजर आती है। ये अमृत काल महापरिवर्तन का महा-इशारा है। स्वर्णिम संस्कृति के उद्‌भव का यह वही संधि चल रहा है।

श्रेष्ठ संकल्प ही स्वर्णिम संस्कृति का आधार-

भारत में ही सतयुग अर्थात् दैवी-देवताओं की दुनिया थी। हम सभी देवी-देवताओं के घराने की दिव्य आत्माएं हैं। जहां प्रत्येक आत्मा सुख-शांति, आनंद, प्रेम, पवित्रता से भरपूर थी। स्वर्णिम संस्कृति में प्रत्येक आत्मा के संकल्प शुभ और शक्तिशाली थे। यही कारण है कि वहां रामराज्य अर्थात् सुख की दुनिया थी। कोई भी चीज हमेशा अपने मूल रूप में नहीं होती है। यही सृष्टि का नियम है। मनुष्य आत्मा के जन्म-मरण के चक्कर में आने से धीरे-धीरे उसमें कलाएं कम होती गईं। जब हमने कलियुग में प्रवेश किया तो आत्मा जन्मोंजन्म की जानीं-अजनाने भूलों, पाप कर्म, विषय-विकारों रूपी कालिमा से कलाहीन अर्थात् अपना मूल स्वरूप खो गई। अब यदि हमें पुनः मन रूपी मंदिर को सजाना है, आत्मा को एकता, समरसता, समानता, सादगी, सत्यता, साहस और शक्तियों से श्रृंगारित करना है तो अपने संकल्पों को श्रेष्ठ बनाना ही होगा। दुनिया की सबसे बड़ी घटना विश्व परिवर्तन की इस मुहिम में अपना हाथ बढ़ाना होगा। परमात्मा पिता की आज्ञा को शिरोधार्य कर उनकी शिक्षाओं को जीवन में अपनाना होगा। उनके बताए मार्ग पर चलना ही होगा। क्योंकि स्वर्णिम दुनिया को लाने का सपना एक परमात्मा के सिवाए कोई और कर नहीं सकता है। इस महान परिवर्तन का सारथी बनकर हम भी उस नई दुनिया के साथी बन सकते हैं।

जो देह-अभिमान को अर्पण करता है उसका हर कर्म दर्पण बन जाता है

महोत्सव] वाराणसी के भोजूबीर सेवाकेंद्र के 25 वर्ष पूर्ण होने पर रजत जयंती महोत्सव मनाया

त्याग-तपस्या, सेवा से लोगों के आध्यात्मिक और नैतिक उत्थान के लिए सदैव तत्पर रहें: बीके सुरेंद्र

दीप प्रज्ज्वलन के साथ आरम्भ हुए कार्यक्रम में यूक्रेन के साथ वैश्विक शांति और स्थिरता के लिए विशेष प्रार्थना की गई।

शिव आमंत्रण, वाराणसी (उप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के भोजूबीर स्थित शाखा के 25 वर्ष पूर्ण होने पर रजत जयंती एवं शिवरात्रि महोत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया। कार्यक्रम में विशेष रूप से पूर्वी उप्र और नेपाल की क्षेत्रीय निदेशिका बीके सुरेंद्र दीदी का भी सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

सेवाकेंद्र संचालिका बीके वंदना दीदी के मार्गदर्शन में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान बीके सुरेंद्र दीदी ने कहा कि हमें त्याग-तपस्या और सेवा द्वारा मानव का जीवन आध्यात्मिक और नैतिक स्तर से ऊंचा उठाने में सदैव तत्पर रहना होगा।

स्वामी अतुलानंद रेजिडेंशियल स्कूल होलापुर की डायरेक्टर दिव्या विशाल सिंह ने कहा कि हमारे लिए गौरव की बात है कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था पूरे विश्व में मानवता के अनोखी सेवाओं की मिसाल कायम कर रही है। क्षेत्रीय प्रबंधक बीके दीपेंद्र, बीके मोहन बीके पंकज, दिल्ली से बृजमोहन अग्रवाल, वाराणसी के विभिन्न शाखाओं की प्रभारी बहनें बीके मोहिनी, बीके सरोज, बीके अंजली , बीके दुर्गा, बीके गीता आदि ने भी अपनी शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में कु. श्रेया, ज्योति, रिया, दिव्या, स्नेहा, यशी आराध्या, आयुषी ने भजनों पर आकर्षक प्रस्तुति देकर कार्यक्रम में समां बांध दिया। अतिथियों का स्वागत भोजूबीर शाखा प्रभारी बीके वंदना दीदी, बीके मीरा, बीके सीमा ने किया। आभार बीके पूनम सिंह ने माना।

75 बाइकर्स ने रैली से दिया यातायात सुरक्षा का संदेश

शिव आमंत्रण, नरसिंहपुर (मप्र)। आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत ब्रह्माकुमारीज़ के नरसिंहपुर सेवाकेंद्र द्वारा जिलेभर में भव्य शिव संदेश बाइक यात्रा निकाली गई। शुरुआत में दिव्य संस्कार भवन में सेवाकेंद्र संचालिका बीके कुसुम द्वारा शिव ध्वजारोहण किया गया। इस मौके पर संकीर्तन समाज अध्यक्ष पं. रामस्वरूप शर्मा, सरदार सिंह, सच्चीदानंद आश्रम से एनटो एमपी, गायत्री परिवार से राघवेन्द्र शर्मा, पतंजलि आयुर्वेद से एसके चतुर्वेदी, वरिष्ठ अधिवक्ता विनय जैन मौजूद रहे।

यात्रा में महात्मा गांधी, महारानी लक्ष्मीबाई , सर्वधर्म सदभाव की सुंदर मनमोहक झांकियां मुख्य आकर्षण का केंद्र रहीं। इस दौरान नगर के प्रमुख स्थानों पर देशभक्त शहीदों को श्रद्धांजलि भी अर्पित की गई। पूरे आयोजन के दौरान लोगों को देशभक्ति का संदेश दिया गया। साथ ही सड़क सुरक्षा के प्रति सभी को जागरूक किया गया।

मेडिटेशन से डिप्रेशन को दूर कर सकते हैं: एसीपी पुलिस

शिव आमंत्रण, दिल्ली। मजलिस पार्क सेवाकेन्द्र दिल्ली में 86 वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें दिल्ली पुलिस के एसीपी दिनेश ने कहा कि मेडिटेशन करने से डिप्रेशन को दूर किया जा सकता है। अच्छी बातें सुनने से आपसी झगड़ों को दूर किया जा सकता है। गुरुद्वारे के चीफ सुरेन्द्र सिंह भाटिया, इंद्रा नगर गुरुद्वारे से सरदार बलवंत सिंह, मोती मस्जिद से मुफ्ती मोहम्मद, निगम पार्षद गरिमा गुप्ता, युवा नेता अरुण गुप्ता जी भी शामिल हुए। बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। बीके राजकुमारी ने सभी को शिव जयंती का रहस्य बताया। बीके शारदा ने सभी को योग की गहन अनुभूति कराते हुए आभार माना।

शिव निराकार परमात्मा हैं और शंकर आकारी देवता: बीके मधु

शिव आमंत्रण, आगरा (उप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ आगरा म्यूजियम, न्यू सुरक्षा विहार गीता पाठशाला द्वारा महाशिवरात्रि पर शिव संदेश कलश यात्रा निकाली गई। यात्रा न्यू 'सुरक्षा विहार से होते हुए सभी कॉलोनी वासियों को पर्चे द्वारा संदेश दिया गया। इस दौरान यात्रा में शामिल बीके भाई-बहनों का पुष्पों द्वारा जगह-जगह स्वागत किया गया।

समापन न्यू सुरक्षा विहार गीता पाठशाला ग्वालियर रोड पर संपन्न हुआ। इसी के साथ शिव ध्वजारोहण भी किया गया नारे भी लगाए गए, प्रतिज्ञा भी कराई गई। आगरा म्यूजियम से पधारीं बीके मधु ने शिव और शंकर में महान अंतर बताते हुए कहा कि शिव निराकार परमात्मा हैं शंकरा आकारी देवता हैं। शिव परमधाम के रहने वाले हैं, शंकर सूक्ष्म वतन के रहने वाले हैं। बीके संगीता ने भी संबोधित किया।

विधान सभा अध्यक्ष ने किया उद्घाटन

शिव आमंत्रण, पटना (बिहार)। महाशिवरात्रि पर सेवाकेंद्र द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस मौके पर कार्यक्रम का उद्घाटन अतिथि के रूप में शामिल बिहार विधानसभा के अध्यक्ष विजय कुमार सिन्हा, बीके संगीता, बीके ज्योत्सना, बीके सविता, बीके ज्योत्सना, वेदप्रकाश, रवि उपाध्याय, रमेश ने किया।

सेना के जवानों का किया सम्मान

शिव आमंत्रण, फरीदाबाद (हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज के 'फरीदाबाद संजय एनक्लेव' स्थित शाखा द्वारा अमृत महोत्सव के उपलक्ष में सेना के वीर जवानों का सम्मान किया गया। सेना से सेवानिवृत्त सैनिक भाइयों का सम्मान किया गया। मुख्य अतिथि विधायक पंडित नीरज शर्मा ने कहा कि सच्ची शांति सिर्फ राजयोग द्वारा ही प्राप्त हो सकती है। आज के इस मल्टीमीडिया युग में जब हम खास तौर पर मोबाइल के गुलाम हो गए हैं। उनसे सिर्फ अध्यात्मिक शक्ति द्वारा ही मुक्त हो सकते हैं अर्थात विजय प्राप्त की जा सकती है और यह अध्यात्मिक शांति ब्रह्माकुमारीज की सेवा केंद्रों पर जाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। मुख्य वक्ता के रूप में बीके डॉ. सुधा ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन बीके शोभा ने किया। इस मौके पर हंसराज सिंह आर्मी पैरा कमांडो, जगदीश कटारिया (बीएसएफ), राजेंद्र सिंह सब लेफ्टिनेंट नेवी, अमीन अली आइटीबीपी से, धर्मपाल सिंह राजपूताना राइफल्स, सतपाल सिंह राणा (आर्मी इलेक्ट्रॉनिक मशीन इंजीनियरिंग कैप्टन), इंद्रपाल सिंह (सूबेदार जाट रेजिमेंट) आदि सैनिक भाईयों का सम्मान किया गया।

परमात्मा अवतरित होकर शांति-सुख, प्रेम, पवित्रता की आत्माओं में अलख जगाते हैं

शिव आमंत्रण, तेघड़ा/बेगूसराय (बिहार)। आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत ब्रह्माकुमारीज़ के स्थानीय तेघड़ा सेवाकेंद्र में 86वीं त्रिमूर्ति शिव अवतरण महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में राजयोगिनी बीके कंचन ने कहा जब पूरे विश्व में अज्ञानता का अंधकार फैलने लगता है, तभी परमपिता परमात्मा शिव इस धराधाम पर अवतरित होकर सभी आत्माओं में ज्ञान-योग और पवित्रता की अलख जगाते हैं। उन्होंने कहा कलयुग की रात्रि ही महाकाल की रात्रि है। कलयुग के अंतिम चरण में भगवान शिव हम सभी आत्माओं को शांति, सुख, प्रेम,पवित्रता व सहनशीलता के गुणों को धारण करने का उपाय बताते हैं तथा एक मूल्यनिष्ट समाज की स्थापना का कार्य संपन्न करते हैं। नाटक, नृत्य एवं मनमोहक संगीत से लोगों को भरपूर किया गया। अथितियों में अनुमंडल पदाधिकारी राकेश कुमार, थानाध्यक्ष संजय कुमार, गौशाला समिति सचिव शिव कुमार केजीरिवाल आदि शामिल रहे।

सूचना के लिए संपर्क करें

सामाजिक सेवाओं तथा आंतरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक शिव आमंत्रण समाचार पत्र एक संपूर्ण अखबार है। इसमें आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है, यही हमारी ताकत है।
वार्षिक मूल्य 110 रुपए, तीन वर्ष 330
आजीवन 2500 रुपए

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़ शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 9414172596, 6377090960
Email shivamantran@bkivv.org

Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23, Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2021

Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

Published on 14th of each month & Issue- april 2022